|| ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः||

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 142 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मार्च– 2020 30/–प्रति

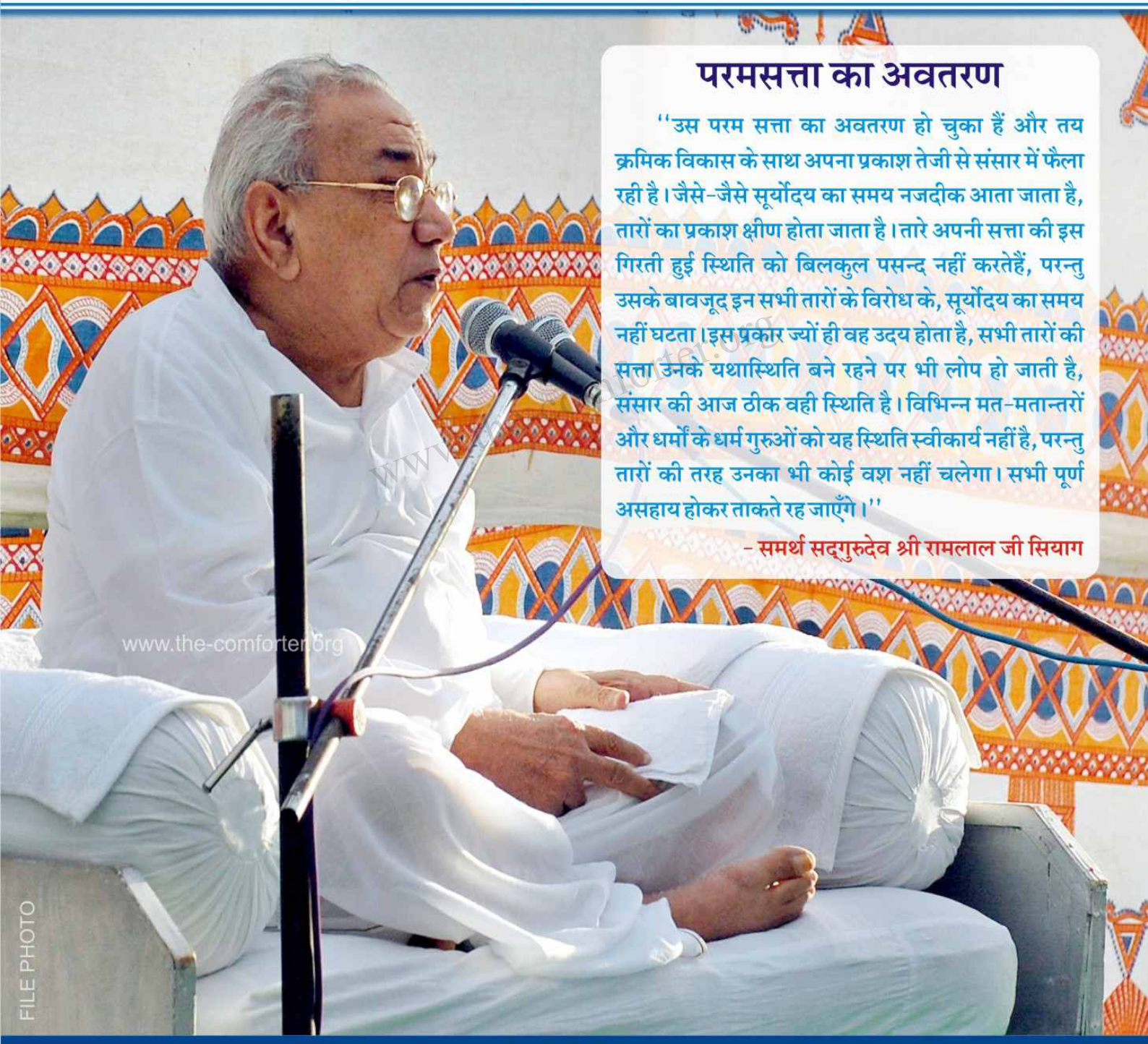

परमसत्ता का अवतरण

''उस परम सत्ता का अवतरण हो चुका हैं और तय क्रमिक विकास के साथ अपना प्रकाश तेजी से संसार में फैला रही है। जैसे-जैसे सूर्योदय का समय नजदीक आता जाता है, तारों का प्रकाश क्षीण होता जाता है। तारे अपनी सत्ता की इस गिरती हुई स्थिति को बिलकुल पसन्द नहीं करतेहैं, परन्तु उसके बावजूद इन सभी तारों के विरोध के, सूर्योदय का समय नहीं घटता। इस प्रकार ज्यों ही वह उदय होता है, सभी तारों की सत्ता उनके यथास्थिति बने रहने पर भी लोप हो जाती है, संसार की आज ठीक वही स्थिति है। विभिन्न मत-मतान्तरों और धर्मों के धर्म गुरुओं को यह स्थिति स्वीकार्य नहीं है, परन्तु तारों की तरह उनका भी कोई वश नहीं चलेगा। सभी पूर्ण असहाय होकर ताकते रह जाएँगे।''

– समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

FILE PHOTO

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

''आओ उस ज्योति में पहुँचे, जो स्वर लोक की है,
उस ज्योति में जिसे कोई खण्ड-खण्ड नहीं कर सकता है।''

-वेद (सिद्धयोग बड़ी पुस्तक पृष्ठ-210)

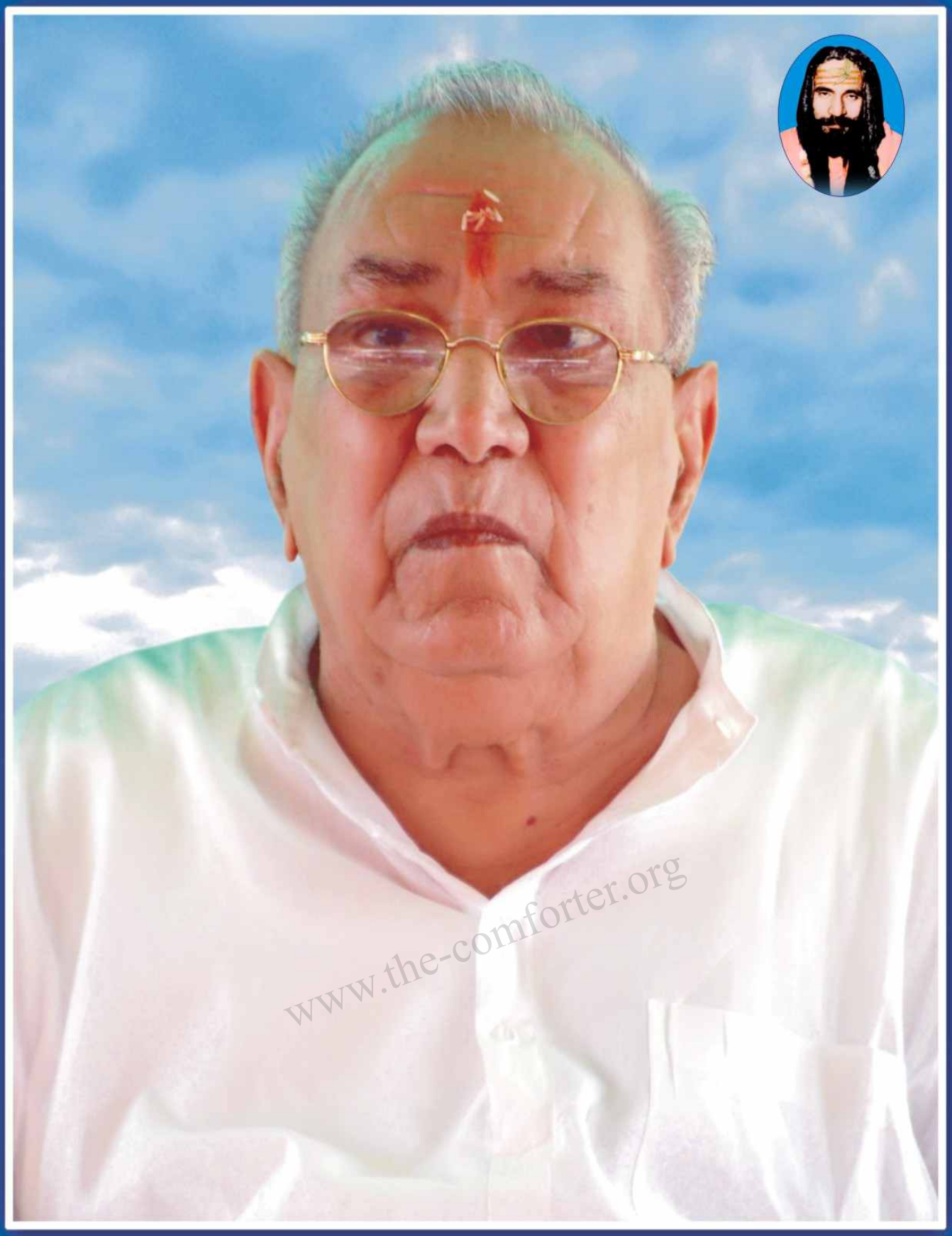

www.the-comforter.org

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 142 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मार्च – 2020

वार्षिक 300/- ❋ द्विवार्षिक : 600/- ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- ❋ मूल्य 30/-

❖

संस्थापक एवं संरक्षक :

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

❖

सम्पादक :

रामूराम चौधरी

कार्यालय :

Spiritual Science

पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 001
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

गुरु ?.....4
जीवन का परम लक्ष्य (सम्पादकीय).....5
शक्तिपात दीक्षा का अत्यधिक महत्त्व.....6
सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग.....7–8
विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध.....9
गुरुदेव सियाग सिद्धयोग (अनुभूतियाँ).....11–13
प्रार्थना और ध्यान.....14
आध्यात्मिक चेतना कैसे फैलती है ?.....15–17
मूलोद्गम् एक है.....18
चित्र पृष्ठ.....19–22
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....23
नेकी कर दरिया में डाल (कहानी).....24–25
हिन्दी–अंग्रेजी शब्दावली.....26
विश्वास.....27
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ.....28
वर्तमान भारत.....29
योग के आधार.....30
योग के बारे में.....31
योगियों की आत्मकथा.....32
How does Spiritual Consciousness Spread?.....33
सिद्धयोग.....34
हमारा पथ.....35
शेष पृष्ठ सम्पादकीय.....36–37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

''गुरु''?

''गुरु-जो निर्गुण निराकार ईश्वर के सगुण साकार रूप होते हैं।''

''जो परिवर्तन मुझमें आया, वो मानव मात्र में आयेगा। 'मनुष्य', मनुष्य है और मैंने लाखों को यह परिवर्तन मूर्तरूप से करवाकर बता दिया। **'गुरु'** में गुरुत्वाकर्षण होता है इसलिए गुरु का यहाँ (**आज्ञाचक्र**) पर ध्यान कराया जाता है। अगर गुरु में **गुरुत्त्वाकर्षण** है तो मन रुक जाएगा और नहीं तो प्रोफेशनल (व्यावसायिक) है तो जीवन भर आँख बन्द किये बैठे रहो, गुरु को भेंट चढ़ाते रहो, कुछ नहीं होना। मैं तो कह देता हूँ, दूसरा गुरु बदलो। बहुत से गुरु रोक लगाते हैं -इस बात का मुझे यहाँ आकर पता लगा। दूसरा गुरु धारण किया तो पता नहीं क्या हो जाएगा? नरक में चला जाएगा, द्रोह हो जाएगा। मैं तो मेरे शिष्यों को कह देता हूँ कि **सौ गुरु** और बना लो, मुझे कोई परेशानी नहीं ! दो विद्या हैं - परा और अपरा। अपरा विद्या में पहली क्लास से एम. ए. तक कितने गुरु बदलते हो? यह परा विद्या (पेरासाईकोलॉजी) है। इसमें भी गुरुओं की स्टेजेज (अवस्थाएँ) अलग-अलग होती हैं। रोक लगाने वाली बात मेरी समझ में नहीं आती। मैं नहीं लगाता रोक। मैं तो कहता हूँ-सौ गुरु और बना लो मुझे कोई परेशानी नहीं। दत्तात्रेय जी ने कितने गुरु बनाए थे?

इस प्रकार यहाँ (आज्ञाचक्र) पर गुरु का ध्यान किया जाता है। नाम जप चल रहा है। इससे आगे आपकी ड्यूटी खत्म। अब बताने वाले ने जो बताया है, अगर उसमें सच्चाई है तो आगे का काम शुरु हो जाएगा और नहीं तो जीवन भर आँख बन्द किये बैठे रहो, कुछ नहीं होना।''

- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सम्पादकीय....

''जीवन का परम लक्ष्य''

हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? परम दयालु सद्गुरु भगवान् ने हमें मंत्र दीक्षा देकर कृतार्थ कर दिया तथा दिखा दिया कि ''मनुष्य स्वयं परमात्मा है, बस इस आराधना से अपने आप को जान जाओगे कि आप क्या हैं? तथा कहाँ जा रहे हैं? मानव जीवन का परम लक्ष्य तो वैदिक दर्शन के मूलभूत दिव्य शब्द पुँज-''तत् त्वम् असि'' (तत्त्वमसि) के सारभूत तत्त्व के तद्रूप हो जाना है। श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी की श्रीमां ने इस विषय में जीवन विज्ञान के लक्ष्य के विषय में सटीक रूप से समझाया है-

उन्होंने हमें बताया है कि ''हमारे जीवन का कोई-न-कोई लक्ष्य अवश्य होना चाहिये। बिना लक्ष्य का जीवन बिना पतवार की नाव के समान है जो हवा के थपेड़ों की दया पर आश्रित रहती है। हममें से हर एक के जीवन का कुछ-न-कुछ उद्देश्य है। यह और बात है कि हममें से अधिकतर उससे अपरिचित हैं, यह भी नहीं जानते कि लक्ष्य के जैसी कोई चीज भी है। सामान्यतः, जीवन के लक्षण गिनाये जाते हैं : **जन्म लेना, आत्मसात् करना, निष्कासन और उत्पादन करना और फिर मर जाना।**

माताजी के अनुसार भगवान् ने कोई बेकार चीज नहीं बनायी, कोई बेकार व्यक्ति नहीं बनाया, फिर भी हम सारे संसार में उथल-पुथल और अव्यवस्था देखते हैं। इसका कारण क्या है? इसे कैसे समझा जाये? **इसका सबसे बड़ा कारण है सामंजस्य का अभाव।** हर वस्तु का, हर व्यक्ति का एक अपना स्थान है जहाँ यह अत्यंत आवश्यक है, **कोई और उसकी जगह पूरी नहीं कर सकता।** लेकिन वर्तमान अवस्था में सभी चीजें और सभी व्यक्ति स्थान-भ्रष्ट हैं और यही सारी गड़बड़ की जड़ है। चकबस्त कहते हैं :

जिंदगी क्या है,
अनासिर का जुहूरे तरतीब
मौत क्या है
इन्हीं अजजा का परेशां होना।

(जीवन क्या है? तत्त्वों का सामंजस्य और मौत क्या है? उन्हीं का बिखर जाना।) बात इतनी सरल तो नहीं है पर है इसी तरह की। जीवन को सफल बनाना है तो सत्य को पाना ही होगा।

माताजी ने बताया है कि सत्य चार रूपों में प्रकट होता हैं- वे हैं- **प्रेम, ज्ञान, शक्ति और सौंदर्य।** अगर हम अपनी सच्ची सत्ता को पा लें तो ये चारों सहज रूप में हमारे अंदर प्रकट होंगे।

चैत्य है एक छोटी-सी चिनगारी जो हम सबके अंदर मौजूद है लेकिन है बहुत सारे कूड़े-कबाड़ से ढकी हुई। अगर हम इसे चेता सकें तो यह धधक उठेगी और जीवन के सारे कूड़े-कबाड़ को भस्म कर देगी। यह भगवान् का एक छोटा-सा अंश है जो हमेशा हमारी सहायता करने के लिये तत्पर रहता है लेकिन यह सहायता तभी करता है जब हम सहायता माँगे। हमारी इच्छा के विरुद्ध सहायता लादना उसका स्वभाव नहीं है, वह कभी जल्दबाजी में नहीं होता। उसे प्रतीक्षा करना आता है, सारा शाश्वत काल उसके सामने पड़ा है।

चैत्य है एक छोटी-सी चिनगारी जो हम सबके अंदर मौजूद है लेकिन है बहुत सारे कूड़े-कबाड़ से ढकी हुई। अगर हम इसे चेता सकें तो यह धधक उठेगी और जीवन के सारे कूड़े-कबाड़ को भस्म कर देगी। यह भगवान् का एक छोटा-सा अंश है जो हमेशा हमारी सहायता करने के लिये तत्पर रहता है लेकिन यह सहायता तभी करता है जब हम सहायता माँगे। हमारी इच्छा के विरुद्ध सहायता लादना उसका स्वभाव नहीं है, वह कभी जल्दबाजी में नहीं होता। उसे प्रतीक्षा करना आता है, सारा शाश्वत काल उसके सामने पड़ा है।

प्रेम इसी के द्वारा प्रकट होता है। यहाँ प्रेम से हमारा मतलब स्वार्थ, वासना और अधिकार-लिप्सा से भरी वह चीज नहीं है जिसे प्रेम कहा जाता हैं। यह प्रेम सबसे बड़ी शक्ति है, यह भगवान् के साथ हमें जोड़ता है, इसी के कारण संसार खड़ा है। यह अपने निचले रूपों में भी लेना नहीं, देना

शेष पृष्ठ 36 व 37 पर ...

गुरु-शिष्य परम्परा में

शक्तिपात दीक्षा का अत्यधिक महत्त्व

द्विज-दूसरा जन्मदाता-गुरु, जिनके संबंध में बाइबिल कहती है- ''मैं तुझसे सच्च-सच्च कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।''

गुरु-शिष्य परम्परा में शक्तिपात दीक्षा का अत्यधिक महत्त्व है। शक्तिपात-दीक्षा हमारे दर्शन का उच्चत्तम दिव्य-विज्ञान है। यह गुरुओं द्वारा दी जाने वाली गुप्तदीक्षा है, जो आदि काल से गुरु-शिष्य परम्परा में चली आ रही है। गुरु, शक्तिपात द्वारा साधक की कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं। हमारे शास्त्रों में इसे जगत् जननी कहा है। जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिंण्ड में है। यह दिव्य ज्ञान मात्र हमारे ऋषियों की ही देन है।

देहस्था: सर्व्व विद्याश्च
देहस्था:सर्व्व देवता:।
देहस्था: सर्व्व तीर्थानि
गुरु वाक्येन लभ्यते।।
ब्रह्माण्ड लक्षणं सर्व्व
देह मध्ये व्यवस्थितम्।।
''ज्ञान संकलिनी तन्त्र''

सागर महि बूंद,
बूंद महि सागर।
कवणु बुझै विधि जाणै।।
--श्री नानक देव जी।।

बूँद समानी समुंद में,
यह जानै सब कोय।
समुंद समाना बूँद में,
बूझै विरला कोय।। कबीर।।

हमारे ऋषियों ने मनुष्य शरीर को विराट स्वरूप प्रमाणित करके उसके अन्दर सम्पूर्ण सृष्टि को देखा। इसके जन्म दाता परमेश्वर का स्थान सहस्रार में और उसकी पराशक्ति (कुंडलिनी) का स्थान मूलाधार के पास है। इन्हीं दोनों के कारण ही सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई। साधक की कुंडलिनी चेतन होकर सहस्रार में लय हो जाती है, उसी

को मोक्ष की संज्ञा दी गई है।

इसी सिद्धान्त के अनुसार संत सद्गुरु शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी को जाग्रत करके सहस्रार मे पहुँचाते हैं। शक्तिपात से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब क्या होता है, इस संबंध में कहा है-

सुप्त गुरु प्रसादेन
यदा जाग्रर्ति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि
भिदयन्ति ग्रन्थायो पिच।।
''स्वात्माराम हठयोग प्रदिपिका''

''जब गुरुकृपा से सुप्त कुंडलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का वेधन होता है।''जाग्रत हुई कुण्डलिनी, सुषुम्ना नाड़ी में से होकर ऊर्ध्व गमन करने लगती है। वह छह चक्रों-मूलाधार,स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञाचक्र और तीनों ग्रन्थियों-**ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि एवं रुद्रग्रंथि का वेधन करती है,** और अन्त में समाधि स्थिति, जो कि समत्वबोध की स्थिति है, प्राप्त करा देती है।

परन्तु विश्व का कोई भी दर्शन क्रियात्मक ढ़ंग से मोक्ष प्राप्ति का पथ प्रदर्शित नहीं करता। यह अद्वितीय दिव्य ज्ञान तो मात्र सनातन धर्म, वेदान्त दर्शन की ही देन है। विश्व के बाकी धर्म बौद्धिक तर्क एवं शब्द जाल के जंजाल में फँसाकर ईश्वर की सत्ता का आभास दिलाने का प्रयास मात्र करते हैं। वे कोई प्रमाण नहीं दे सकते।

दीक्षा प्राप्त किए बिना मनुष्य को उस परमसत्ता की प्रत्यक्षानुभूति हो ही नहीं सकती। इस सिद्धान्त को ईसाई दर्शन भी पूर्णरूप से स्वीकार करता है। गुरु से दीक्षा लेकर यीशु द्विज बना था। इसीलिए उसने इजराइलियों के धर्म गुरु, निकुदेमुस को कहा- ''मैं तुझसे सच्च-सच्च कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।''

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
संदर्भ-सिद्धयोग बड़ी
पुस्तक, पृष्ठ-211

www.the-comforter.org

विश्वव्यापी चेतना में विराजमान

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

''केन्द्रीय पुरुष को खोज पाना एक अत्यंत व्यापक सिद्धि है जिससे सारी सृष्टि हमारा अपना स्वरूप बन जाती है, किन्तु साथ ही हमारे व्यष्टि रूप का लोप हो जाता है, क्योंकि यह समझना कोरी भूल है कि हमारा चिरपरिचित वही पुरातन व्यक्ति विशेष...कोई श्रीयुत् रामलाल अपनी विश्वव्यापी चेतना में विराजमान होकर उस दृश्य का आनंद उपभोग करते हों- अब रामलाल रहे ही कहाँ? फिर, विश्वातीत ब्रह्म की खोज करना, एक बहुत ऊँची सिद्धि है।''

हमारे इस पार्थिव प्रवास में चेतना का त्रिविध रूपान्तर लक्षित है - चैत्य पुरुष या अंतस्थ ब्रह्म की खोज, निर्वाण अथवा विश्वातीत ब्रह्म की खोज और केन्द्रीय पुरुष अथवा विश्वलीलारत ब्रह्म की खोज। ईसाई धर्म-परंपरा में जिस 'पिता-पुत्र-पवित्र आत्मा' त्रिक का उल्लेख है, संभवत: वास्तविक अभिप्राय यही है।

हमारा उद्देश्य इस या उस अनुभूति की उत्कृटता परखना नहीं है, बल्कि अपने लिए उनके सत्य की छान-बीन करनी है -विविध दार्शनिक सिद्धांतों और धर्मों के बीच विवाद चला करता है कि भगवान् के अनेक रूपों में कौन-सा प्रमुख है, और भिन्न-भिन्न योगियों, ऋषियों तथा महात्माओं ने भिन्न-भिन्न दर्शन-सिद्धांतों अथवा धर्मों को श्रेष्ठ माना है।

हमारा कार्य इनमें से किसी एक को लेकर विवाद करना नहीं, बल्कि सब का सत्य उपलब्ध करके उन्हें आत्मसात् करना है। हमें किसी एक रूप का अनुसरण और अन्य सब का निषेध नहीं करना, हमें तो भगवान् के साथ उसके सभी रूपों में मिलना है और सब नाम-रूप से परे भी उसका आलिंगन करना है?... पूर्ण योग का यही अर्थ है। किन्तु प्रश्न उठता है कि क्या इस त्रिविध उपलब्धि से परे अन्य कुछ नहीं है, क्योंकि ये तीनों ही अनुभूति में चाहे कितनी भी ऊँची से ऊँची क्यों न प्रतीत हों, किन्तु इनमें कोई भी हमें वह सर्वांगीण संपूर्णता प्रदान नहीं करती जिसकी हमें अभीप्सा है, विशेषत: यदि हम यह ध्यान रखें कि पृथ्वी का और मानव के व्यष्टि रूप का भी इस संपूर्णता में समावेश हो।

वास्तव में चैत्य पुरुष की

उपलब्धि एक महती सिद्धि है, जिसमें हम अपनी दिव्यता के प्रति सचेतन हो उठते हैं। किन्तु वह व्यष्टि रूप तक सीमित रहती है और उन वैयक्तिक दीवारों को तोड़ नहीं गिराती जिनके भीतर हम बंदी हैं।

फिर भी हमारे अंत:करण से यही आवाज आती है कि हम जो देहधारी जीव संपूर्णता की अभीप्सा किया करते हैं. वह इसीलिए कि यह संपूर्णता वास्तव में यहीं है. और देह के अंदर वह संभव है अन्यथा हमने इसके लिए अभीप्सा की न होती। जिसे हम 'कल्पना' कहते हैं, ऐसी तो वस्तुत: कोई भी चीज नहीं - होती हैं केवल वे स्थगित वास्तविकताएँ या वे सत्य जो अभी अपने मुहूर्त की प्रतीक्षा में हैं। जूल वैर्न अपने ढंग से इसका साक्षी है। तो अभी एक और खोज करनी तो कहीं बाकी नहीं है - यानी चेतना का चौथा परिवर्तन, जो सब का रूपान्तर कर दे ?

केन्द्रीय पुरुष को खोज पाना एक अत्यंत व्यापक सिद्धि है जिससे सारी सृष्टि हमारा अपना स्वरूप बन जाती है, किन्तु साथ ही हमारे व्यष्टि रूप का लोप हो जाता है, क्योंकि यह समझना कोरी भूल है कि हमारा चिरपरिचित वही पुरातन व्यक्तिविशेष ...कोई श्रीयुत् रामलाल अपनी विश्वव्यापी चेतना में विराजमान होकर उस दृश्य का आनंद उपभोग करते हों - अब रामलाल रहे ही कहाँ ! फिर, विश्वातीत ब्रह्म की खोज करना एक बहुत ऊँची सिद्धि है, किन्तु उसमें व्यष्टि तथा समष्टि दोनों का ही विलय हो जाता है...

रह जाता है केवल विश्वलीला से सदा विरत ब्रह्म। सिद्धांतरूप में हम कह सकते हैं कि 'पिता-पुत्र-पवित्र आत्मा' तीनों एक हैं ... सिद्धांतरूप में तो हम जो जी चाहे कह सकते हैं - किन्तु व्यवहार में, अनुभूति में, ऐसा प्रतीत होता है कि एक गहरी खाई ने चेतना के इन परिवर्तनों को परस्पर एक दूसरे से अलग कर रखा है। जब तक हम उस अनुभूति-पथ को नहीं खोज लेते, जिसमें सर्वेश्वरवाद, व्यक्तिवाद और अद्वैतवाद के **त्रिधा विच्छेद** का समाधान करना हमारे लिए संभव हो जाये, तब तक संपूर्णता की आशा न व्यक्ति के लिए है, न संसार के लिए।

समष्टिरूप से विरहित अपने वैयक्तिक केन्द्र को प्राप्त कर लेना हमारे लिए पर्याप्त नहीं है और न ही अपने व्यष्टिरूप को गँवा कर केवल समष्टि से हमारा काम चलेगा, और उस परम शान्ति का हम क्या करेंगे ? जिसमें व्यष्टि और समष्टि दोनों ही विलीन हो जायें।

श्री रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे 'मुझे शक्कर का भोग करना है, शक्कर हो नहीं जाना।' दुर्व्यवस्था और यंत्रणा से पूर्ण इस दुनिया में जहाँ हमें आत्मस्वरूप बनना है, कार्य करना है, मुकाबला करना है, यहाँ हमारी अस्ति अत्यंत आवश्यक है। इस अस्ति के बिना तो हमारे बनने का इस भीड़भड़ाक्के में कहीं अता-पता भी न रहेगा और बनने के अभाव में हमारा अस्तित्व एक आनंदमय शून्य में समा जायेगा। और व्यष्टि रूप का लय हो जाने पर, जब हम ही न रहेंगे तो सारी आश्चर्यजनक सिद्धियों से हमें क्या लाभ ? यही है वह प्रतिवाद जिसका समाधान दार्शनिक रूप से नहीं बल्कि जीवन-क्षेत्र में और कार्य-क्षमता के रूप में होना आवश्यक है।

अभी तक तो यही प्रतीत होता है कि या तो इस प्रतिवाद को दूर करने वाला मार्ग कोई है ही नहीं, अथवा अभी तक अविदित है। इसी कारण से सब धर्मों और सभी आध्यात्मिक परंपराओं ने विश्वातीत पिता को, इस अभागी दुनिया से परे, **त्रिकमाला** के शिखर पर बैठाया है और हमें अपनी अभीप्सित संपूर्णता के लिए अन्यत्र खोज करने का आदेश किया है।

फिर भी हमारे अंत:करण से यही आवाज आती है कि हम जो देहधारी जीव संपूर्णता की अभीप्सा किया करते हैं, वह इसीलिए कि यह संपूर्णता वास्तव में यहीं है, और देह के अंदर वह संभव है अन्यथा हमने इसके लिए अभीप्सा की न होती। जिसे हम **'कल्पना'** कहते हैं, ऐसी तो वस्तुत: कोई भी चीज नहीं - होती हैं केवल वे स्थगित वास्तविकताएँ या वे सत्य जो अभी अपने मुहूर्त की प्रतीक्षा में हैं। जूल वैर्न अपने ढंग से इसका साक्षी है। तो अभी एक और खोज करनी तो कहीं बाकी नहीं है - यानी चेतना का चौथा परिवर्तन, जो सब का रूपान्तर कर दे ? -

संदर्भ- लेखक **सत्प्रेम** द्वारा लिखित पुस्तक **'चेतना की अपूर्व यात्रा'** के शीर्षक-**'अतिचेतन'** में पृष्ठ-197 पर, संस्करण-1999

www.the-comforter.org

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

आराधनाशील साधक की साधना में कुछ ऐसी कठिनाईयाँ और पथ से भटकाने वाली विचारधाराएँ पैदा होती हैं जिनसे साधक को विशेष रूप से सतर्क रहना होता है। इसी विषय पर महर्षि श्री अरविन्द ने अपने पत्र भाग-3 में इस विषय को समझाया है।

यह ऐसा तथ्य है जिसे आदिकाल से भारत की तरह यूरोप और अफ्रिका के सभी योगी और गुह्यविद् भी जानते हैं कि जहाँ कभी योग या यज्ञ प्रारम्भ किया जाता है, वहाँ विरोधी आसुरिक शक्तियाँ किसी भी साधन द्वारा उसे रोकने के लिये आ जुटती हैं।

यह भी प्रसिद्ध है कि एक "**निम्न प्रकृति**" है और एक उच्चतर "**आध्यात्मिक प्रकृति**"--यह भी सब जानते हैं कि वे परस्पर भिन्न दिशाओं में खींचती हैं और पहले-पहल निम्नतर प्रकृति प्रबलतम होती है और बाद में उच्चतर प्रकृति। यह सर्व विदित है कि विरोधी आसुरिक शक्तियाँ निम्नतर प्रकृति की क्रियाओं का लाभ उठाती है और उनके द्वारा सिद्धि को बिगाड़ने, नष्ट भ्रष्ट करने या उसमें विलम्ब कराने की चेष्टा करती हैं।

यह उपनिषद युग जैसे पुराने काल से कहा जाता रहा है (**क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्**); आगे जाकर ईसा मसीह ने भी यही कहा था "जिस रास्ते और द्वार से होकर भगवान् के राज्य में प्रवेश करता है वह कठिन और तंग है और यह भी कि "**पुकार बहुतों की होती है पर चुने विरले ही जाते हैं**"--इन सबका कारण यह कठिनाइयाँ ही है। किन्तु यह भी हमेशा सर्व विदित रहा है कि जो लोग हृदय से सच्चे और **निष्ठावान्** हैं और ऐसे ही बने रहते हैं तथा जो भगवान् पर भरोसा रखते हैं, वे सब कठिनाइयों, ठोकरों या पतनों के बावजूद लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

सामान्य मानव-त्रुटियाँ होना एक बात है-- वे अविद्यामय निम्न प्रकृति की क्रिया है। पर विरोधी शक्तियों की क्रिया एक ऐसा विशेष हस्तक्षेप है, जो उग्र अन्तः संघर्षों को, असामान्य अवसादों को, इस प्रकार के विचार और प्रवृत्तियों को उत्पन्न करता है जिन्हें ऐसे सुझावों के रूप में आसानी से पहचाना जा सकता है जैसे आश्रम से चले जाना, योग-साधना छोड़ देना, भगवान् के विरुद्ध विद्रोह करना, असाध्य प्रतीत होने वाली विपति और विनाश के सुझाव, बुद्धिहीन आवेग आदि-आदि । यह सर्व सामान्य मानव निर्बलताओं से भिन्न कोटि की चीजें हैं।

मनुष्यों में निम्न प्रकृति का सामान्य प्रतिरोध और विरोधी सत्ताओं की क्रिया, ये दो बिलकुल भिन्न चीजें हैं। पहली स्वाभाविक क्रिया है और सबमें होती है; पिछली क्रिया एक ऐसा हस्तक्षेप है जो **मानवेतर लोक** से होता है। किन्तु यह हस्तक्षेप दो रूपों से हो सकता है-

(1) विरोधी सत्ताएँ निम्न प्रकृति की शक्तियों का उपयोग करती है और उन पर दबाव डालकर उनसे प्रतिरोध करवाती हैं अन्यथा वे शान्त पड़ी रहें, प्रतिरोध को प्रबल या उग्र बनाती हैं अन्यथा वह प्रतिरोध हलका और मद्धिम हो, प्रतिरोध के उग्र होने पर उसकी उग्रता को और भी बढ़ा देती है इसके सिवाय जब विराधी सत्ताएँ इन शक्तियों पर क्रिया करती है तो उनमें एक अनिष्टकारी चतुराई, एक सचेतन योजना और संगठन होता है जो शक्तियों के सामान्य प्रतिरोध में प्रत्यक्ष नही होता।(2)वे कभी-कभी अपनी शक्तियों द्वारा आक्रमण करती है। जब ऐसा होता है तो व्यक्ति प्रायः उससे अल्पकाल के लिये अभिभूत हो जाता है या कम-से-कम उस पर एक ऐसा दुर्निवार प्रभाव छा जाता है जो उसके विचारों,वेदनों और कार्यों को असाधारण बना देता है-- मस्तिष्क पर काला परदा छा जाता है, प्राण में तूफान आ जाता है, सबकुछ इस तरह से कार्य करता है मानों व्यक्ति लाचार हो गया हो और अभिभूत करनेवाली शक्तियों द्वारा घसीटा जा रहा हो।

दूसरी तरफ यह हो सकता है कि उससे अभिभूत होने के स्थान पर केवल व्यक्ति पर उसका कोई प्रबल प्रभाव ही हो; तब लक्षण कम स्पष्ट होते हैं, किन्तु जो इन शक्तियों के तौर-तरीकों से परिचित है उसके लिये व्याधिको देख लेना आसान होता है। अन्त में यह भी हो सकता है कि व्यक्ति उससे आक्रान्त ही हो, अधिकृत या प्रभावित नहीं। जब व्यक्ति उससे पृथक् रहता है तो उससे पराभूत नहीं होता और प्रतिरोध करता है।

ऐसे भी कुछ लोग हैं, जिन्हें विरोधी शक्तियाँ कभी स्पर्श नहीं करती।

संदर्भ-श्री अरविन्द के पत्र भाग-3, पृष्ठ-735 पर

पूर्ण समर्पण

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

''तामसिक वृतियों ने जीव को ऐसा माया जाल में फँसा रखा है कि वह उनके वशीभूत हो कर, जो कुछ भी कर रहा है, उसे न्याय संगत और ठीक समझता हैं, गुरु के सानिध्य में जाते ही तामसिक भावनाएँ पूर्ण रूप से दूर भाग जाती है, **परन्तु इसके लिए पूर्ण समर्पण अनिवार्य है।** समर्पण के बिना कुछ भी नहीं मिल सकता।

ज्यों ही गुरु के प्रति समर्पित हुआ कि तामसिक सत्ता के बंधन खुल जाते हैं। जीव जो कुछ कर रहा है, उसके भले बुरे का तत्काल ज्ञान हो जाता है। ऐसी स्थिति में पूर्ण अंगीकार सरल और सम्भव हो जाता है। परन्तु केवल अंगीकार से काम नहीं बन सकता। तामसिक शक्तियाँ बहुत प्रबल होती हैं, वे फिर कभी दबोच सकती हैं। अत: अंगीकार के साथ उनभावों के त्याग की भी प्रार्थना गुरु के सामने करनी आवश्यक है। गुरु परम दयालु होते हैं। इस प्रकार अंगीकार और त्याग की प्रार्थना तत्काल स्वीकार कर लेते हैं।''

संदर्भ-शीर्षक-'चेतन शक्ति से जुड़े बिना' पृष्ठ-192, सिद्धयोग बड़ी पुस्तक

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

ब्रेन ट्युमर में सिद्धयोग द्वारा अभूतपूर्व फायदा हुआ

मैं संजय कुमार, आर्मी में सेवारत हूँ। मुझे 13.09.2018 को पता चला कि मेरे ब्रेन ट्युमर है तो 14.09.2018 को अश्विनी हॉस्पीटल, मुम्बई में ऑपरेशन करवाया। यहाँ पर पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के शिष्य हर सप्ताह (रविवार) को सिद्धयोग का कार्यक्रम करने के लिए आते हैं। 07.10.2018 को मैं 6वीं मंजिल पर जा रहा था तो गुरुदेव के एक शिष्य ने मुझे बोला कि- ''सर आप यहाँ आइये, यहाँ गुरुदेव के सिद्धयोग का कार्यक्रम चल रहा है'' तो मैं चला गया।

गुरुदेव का प्रवचन सुनने लगा और पूरा होने के बाद उन्होंने 15 मिनट ध्यान करने के लिए बोला तो मैंने ध्यान शुरू किया। पहले ही दिन मुझे ध्यान के दौरान यौगिक क्रियाएँ होने लगी-मुझे लगा कि मेरी जीभ को कोई व्यक्ति हाथ से पकड़ कर खूब तेज घूमा रहा है। लेकिन मुझे पूरा विश्वास करने में दो-तीन हफ्ते का समय लग गया। गुरुदेव की कृपा से पूर्ण विश्वास हो गया। मुझे सद्गुरु की तलाश थी, वह मिल गये।

अब मुझे ध्यान में बैठते ही यौगिक क्रियाएँ होने लगती हैं। लेकिन उस समय लगभग 14 माहिने तक मैंने इसको (ध्यान) इतना महत्त्व नहीं दिया परन्तु मेरे ट्युमर का अचानक बड़ा हो जाने के कारण 23.12.2019 को दुबारा दिल्ली में जब ऑपरेशन हुआ उसके बाद जो तकलीफ हुई उसे सहा नहीं जा सकता था। **उस समय गुरुदेव के दिये 'संजीवनी मंत्र' ने जो कार्य किया और दुःखों से जो छुटकारा मिला, उसको मैं शब्दों में नहीं बता सकता।**

आज मुझे पूरा विश्वास हो गया कि गुरुदेव की शरण में ही मेरा कैंसर शत् प्रतिशत् ठीक होगा और कहीं नहीं होगा। अब मैं चौबीसों घण्टे मंत्र जप रहा हूँ। **अब मुझे समझ में आया कि यदि कोई बीमार है और गंभीरतापूर्वक सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान नहीं करता है तो उनको वांछित परिणाम नहीं मिलता है। मैंने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है, जब तक गुरुदेव के सिद्धयोग को हल्के में लिया तब तक कोई खास परिणाम नहीं मिला।** और ज्योंहि पूरी तरह से गुरुदेव के प्रति समर्पित हुआ कि जल्दी परिणाम मिलने लगा।

-संजय कुमार
कोटा, राजस्थान

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

अन्तर्जगत् की अद्भुत अनुभूतियाँ-2

परम पूज्य समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग और बाबा श्री गंगाई नाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) के पावन चरण कमलों में कोटि-कोटि नमन्।

आपकी ही असीम कृपा से मातृशक्ति कुण्डिलनी देवी जाग्रत हुई है, आपके श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

हे मातृशक्ति कुण्डिलनी देवी आप गुरुदेव की कृपा से 72 हजार नाडियों को शुद्ध करती हुई नित्य नये अनुभव करा रही हैं, आपके श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

पिछले अंक में आपने दिव्य अनुभूतियों के बारे में पढा। आगे गुरुदेव की कृपा से प्रसाद रूप में जो दिव्य अनुभूतियाँ हुई, उन सभी का वर्णन करना असंभव है। परंतु कुछ अनुभूतियों को गुरुदेव की दया दृष्टि से लिखने की कोशिश कर रहा हूँ।

30 जनवरी से 08 फरवरी 2020 तक जयपुर में महामृत्युंजय मंत्र जप का अनुष्ठान चल रहा था, इस समय ध्यान में बहुत ही दिव्य अनुभूतियाँ हुई जिनमें-आचार्य जी को खुशबू से एलर्जी थी तथा कुछ भी खाने के पश्चात पेट खराब हो जाता था। यह समस्या उन्होंने मुझे बताई। मेरे अंदर भावना जाग्रत हुई कि गुरुदेव के संजीवनी मंत्र और ध्यान के बारे में उन्हें बताना चाहिए। मैंने गुरुजी के बारे में उनको बताया और ध्यान भी कराया गुरुदेव की कृपा से उनको ध्यान लग गया। धीरे-धीरे उनकी सारी समस्या दूर हो गई, उनको ध्यान में श्री हनुमान जी महाराज के दर्शन भी हुए। श्री हनुमान जी महाराज मेरे भी इष्टदेव हैं। हम दोनों ध्यान में एक साथ बैठते थे। मैंने ध्यान में ॐ को देखा तो हाथों से तालियाँ बजने लग गई। और गले से ॐ की ध्वनि का उच्चारण होना प्रारंभ हो गया। कभी उदात्त स्वर में, कभी अनुदात्त स्वर में, कभी ॐ का स्वर बहुत दीर्घ खिंचता तो कभी-कभी बहुत ही धीरे से उच्चारण होता और उसके बाद ध्यान खुल जाता। ऐसा कई दिनों तक चलता रहा।

दिन में हम महामृत्युंजय का जाप करते थे। अनुष्ठान चल रहा था तो जप करते हुए शारीरिक क्रियाएँ प्रारंभ हो जाती थी। गले की क्रियाएँ, कभी हाथों से मुद्राएँ बनती थी। कभी सांसे तेजी से चलने लगती, हमेशा शरीर में एक प्रकार की खुमारी सी बनी रहती थी।

एक दिन शाम को आरती करने के बाद सभी विद्वान भोजन प्रसादी पा रहे थे तो मैं और मेरे एक साथी गुरु भाई ध्यान में बैठे क्योंकि हम दोनों नियमित सुबह और शाम ध्यान किया करते हैं।

उस दिन ध्यान में जो अनुभूति हुई उसे आपको बताना चाहूँगा। हम दोनों 15 मिनट के लिए गुरुदेव से प्रार्थना करके ध्यान में बैठ गए। मुझे कई प्रकार की यौगिक क्रियाएँ हुई, दिव्य प्रकाश दिखाई दिया और ॐ का उच्चारण हुआ और मेरी आँखें खुल गई। मैं देखता हूँ कि ध्यान 15 मिनट से अधिक हुआ परंतु मेरा गुरु भाई अभी भी ध्यान में बैठा हुआ था और उसने अपना बायां पैर का तलुवा दोनों हाथों से पकड़े हुए था। मैंने उसे आवाज दी भाई जागो भोजन भी करना है वो एकदम से डर गया और आँखें खोली। अपने पैर की और देखा और बोला अरे मेरा पैर तो एकदम ठीक है। मेरे द्वारा पूछने पर उसने बताया कि अभी ध्यान में, मेरे पैर पर एक गाय ने पैर रख दिया था और पैर से रक्त निकलने लगा तो आप औषधि लेने गए हुए थे। और मैं पैर पकड़े हुए आपका इंतजार कर रहा था। मैं गुरु भाई की यह बात सुनकर आश्चर्य चकित रह गया। क्योंकि मैंने 1 दिन पहले ही ध्यान में एक बहुत ही सुंदर और दिव्य गाय को देखा था उसका आकार बहुत बड़ा था। धन्य हैं गुरुदेव मुझे एक दिन पहले ध्यान में गाय दिखाई और दूसरे दिन ध्यान में गुरु भाई के पैर पर गाय ने पैर रख दिया। कितना दिव्य अनुभव था?

एक दिन ध्यान में बैठा तो मुझे मां सरस्वती के दर्शन हुए। उनका वाहन मोर दिखाई दिया। माँ, वीणा को हाथ में लिए हुए दिखाई दी, उसी समय गले से स्वर लहरियाँ प्रकट होने लग गई अनेक प्रकार के स्वर प्रस्फुटित होने लगे, ऐसा लगने लगा मानो हम गाने का अभ्यास कर रहे हैं। 15 मिनट ध्यान हुआ अत्यधिक आनंद की अनुभूति हुई।

एक दिन ध्यान में श्री गणेश जी

www.the-comforter.org

महाराज के दर्शन हुए। कभी शिवलिंग पर जल से अभिषेक होता हुआ दिखाई देता है। नीला प्रकाश जो ध्यान में दिखाई देता है, वह अब बहुत गहरा हो गया है और उसके अंदर सफेद रंग में जब भी ॐ दिखाई देता है, तभी गले से ॐ का उच्चारण प्रारंभ हो जाता है।

एक दिन मुझे ध्यान में दोनों फेफड़े और श्वसन नली दिखाई दी, उसी समय प्राणायाम होना प्रारंभ हो गया। भ्रामरी प्राणायाम होता है और कुंभक भी होता है।

एक दिव्य अनुभव आपको और बताना चाहूँगा -

श्री जयप्रकाश शर्मा जो मेरे पापा जी हैं। हमेशा ध्यान करते हैं और मंत्र जाप करते हैं। उनको दिव्य अनुभूति हुई। उस समय मैं जयपुर अनुष्ठान में था। उन्होंने सारी बातें मुझे फोन पर बताई कि ध्यान में उनके शरीर में बाई तरफ खिंचाव हुआ। उनको 10 मिनट ही ध्यान लगा उनको लेटने की इच्छा हुई। जाग्रत अवस्था में, वे हाथ पैर और सिर को बेड पर पटकने लगे उसके बाद सिर में दूधिया प्रकाश दिखाई देने लगा। श्री कृष्ण भगवान् बांसुरी बजाते हुए दिखने लगे। महारास का दृश्य दिखाई देने लगा। यह सारा दृश्य उन्हें अर्द्धचेतन अवस्था में दिखाई दे रहा था। उसके बाद एक आश्रम का दृश्य दिखाई दिया। उन्होंने बताया कि वहाँ उनके साथ मैं भी था। अनेक संत महात्मा वहाँ ध्यान कर रहे थे और उन्होंने हम दोनों को कुछ द्रव्य पदार्थ पीने को दिया। हमने वहाँ आश्रम में विश्राम भी किया। यह एक दिव्य अनुभव था। गुरुदेव ने पापा जी को सिद्ध आश्रम के दर्शन कराए।

10 फरवरी 2020 को, मैं ध्यान में बैठा था तो पहले हाथों से तालियाँ बजना प्रारंभ हुआ। हाथ से सर्प की मुद्रा बनी, दूसरे हाथ की हथेली कुहनी के नीचे लगी और सर्प की मुद्रा वाला हाथ आज्ञा चक्र को स्पर्श करने लगा। कभी आज्ञाचक्र पर तो कभी सामने की ओर हाथ सर्प रूप में क्रिया करने लगा। यह क्रिया दोनों हाथों से बारी-बारी से होने लगी। फिर दोनों हाथों की हथेलियों से कान बंद हो गये और ॐ की ध्वनि प्रारंभ हो गई। दोनों कानों से ऐसी आवाज आने लगी मानो बादल गर्जना कर रहे हों। उसके बाद गले से भैरवी राग, शिवरंजनी राग के स्वर गूँजने लगे। आह ! क्या दिव्य अनुभूति थी ? जीवन धन्य हो गया।

शाम के ध्यान में गहरा नीला दिव्य पुंज दिखा उसके बाद पर्वत के ऊँचे शिखरों के बीच में शिवलिंग दिखाई दिया। पर्वत ऊँचे होते चले गए। पर्वतों से आने वाली जलधारा जो दो दिशाओं से आ रही थी। शिवलिंग पर अभिषेक कर रही थीं। पर्वत मालाओं के शिखर आकाश को छू रहे थे। शिवलिंग भी आकाश को छूने लगा। और उसके बाद दृश्य बदल गया और ध्यान खुल गया।

एक दिन ध्यान में रथ पर सवार एक दिव्य पुरुष दिखाई दिया। उनके सिर पर सुन्दर मुकुट था। बडे ही सुन्दर वस्त्र पहने हुए था। रथ के पीछे बहुत भारी सेना थी। सभी कवच पहने हुए थे और सभी के हाथों में तलवार और भाले थे। उसके बाद में लाल पत्थरों से निर्मित एक आलीशान और भव्य किला दिखाई दिया। जिसके बहुत ही बडे दरवाजे दिखाई दिए। उन दरवाजों से सेना ऐसे निकल रही थी मानों युद्ध करने जा रही हो। सभी को जाने की बहुत जल्दी थी। उस किले के अंदर बडे ही सुंदर महल बने हुए थे। उस दृश्य को देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। उसके बाद ध्यान खुल गया।

18 फरवरी 2020 प्रात: ध्यान में बायां पैर दाहिने पैर की जंघा पर आ गया और दाहिने पैर की एड़ी नीचे लग गई अपान वायु ऊपर की ओर खिंचने लगी और मूलबंध लग गया। यह क्रिया बारी-बारी से दोनों पैरों से हुई उसके बाद उड्डियानबंध और जालंधरबंध भी लगा।

उसके बाद पद्मासन लगा और ध्यान स्थिर होने लगा। यह क्रिया शाम के ध्यान में भी हुई और नीले प्रकाश के अंदर नीचे से लेकर ऊपर को जाता हुआ पीले रंग का प्रकाश दिखाई दिया। ऐसा लगा मानो पितांबर पहने हुए श्री कृष्ण भगवान खड़े हैं और उनके चारों ओर से नीला और दूधिया प्रकाश, किरणों के रूप में निकल रहा है। इस छवि का दर्शन करने से जीवन धन्य हो गया।

गुरुदेव की कृपा से मातृशक्ति कुण्डिलनी देवी नित्य नए अनुभव कराती हैं। ध्यान में दृश्य ऐसे बदलते हैं जैसे किसी फिल्म में दृश्य बदलते हैं। उनका वर्णन करना असंभव है। गुरुदेव बहुत ही दयालु है, प्रत्येक जीव पर दया करते हैं।

मैं गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम करता हूँ।

- विजय कृष्ण शास्त्री (भागवत वक्ता)

बल्लभगढ़, भुसावर
जिला भरतपुर
राजस्थान

प्रार्थना और ध्यान

हे मेरे मधुर स्वामी, ऐसी कृपा कर कि मैं बाहरी चीजों में डूब न जाऊं। उनमें मेरे लिये कोई रस नहीं है, कोई स्वाद नहीं है। अगर मैं उनके साथ व्यस्त रहती हूँ तो इसका कारण यह है कि मुझे लगता है कि तेरी यही इच्छा है और कार्य को सर्वांगीण रूप से, क्रिया तथा पदार्थ के अंतिम व्योरों तक संपन्न करना है। लेकिन इतना पर्याप्त है कि अपना ध्यान उनकी ओर मोड़ा जाये और यथा-संभव तेरी शक्तियाँ उनके अंदर भर दी जायें। यह न होने पाये कि वे हमारी चेतना में सच्ची वास्तविकताओं से ऊँचा स्थान पा लें।

हे मेरे मधुर स्वामी, मैं तेरे लिये, तू क्या है इसके ज्ञान के लिये, तेरे साथ तादात्म्य के लिये अभीप्सा करती हूँ। मैं महानतर प्रेम के लिये माँग करती हूँ, जो हमेशा अधिक शुद्ध, हमेशा अधिक विशाल और हमेशा अधिक तीव्र होता जाये और मैं अपने-आपको मानो जड़ में डूबा हुआ पाती हूँ, क्या यही उत्तर है तेरा? चूंकि स्वयं तूने इस तरह जड़ में डूबना स्वीकार कर लिया है ताकि उसे धीरे-धीरे चेतना की ओर जगा सके तो क्या यह तेरे साथ अधिक पूर्ण तादात्म्य का परिणाम है? क्या मेरे लिये तेरा यह उत्तर नहीं है: ''अगर तू सचमुच प्रेम करना सीखना चाहे तो तुझे इस तरह प्रेम करना होगा ...'' ... अंधकार और निश्चेतना में?

हे मेरे प्रभो, मेरे मधुर स्वामी, तू जानता है कि मैं तेरी हूँ और मैं हमेशा वही चाहती हूँ जो तू चाहता है; लेकिन तू क्या चाहता है इसके बारे में, मेरे अंदर कभी कोई संदेह न उठने दे। किसी तरह मुझे हृदय की निर्विकार शांति में प्रदीप्त कर। यदि जरूरी हो तो मुझे अंधेरे में डूबने दे लेकिन कम-से-कम यह जानने दे कि यह तेरी इच्छा है।

प्रभो, उत्तर में, मैं अपने हृदय में तेरी दिव्य और शाश्वत उपस्थिति का आनंदगान सुन रही हूँ।

श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां
''प्रार्थना और ध्यान''
पुस्तक, पृष्ठ-92 से
24 मई 1914

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक चेतना कैसे फैलती है ?

''हम देखते हैं, इस युग में प्रचलित आराधना पद्धति से की गई प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं मिल रहा है। इससे यही नतीजा निकलता है कि हमारे प्रार्थना पत्र पर पाने वाले का सही पता नहीं लिखा होता है। पता अगर ठीक होता तो उसका उत्तर निश्चित रूप से मिलता। अत: इस युग के मानव को अगर उस परम सत्ता की खोज करनी है तो उसका सही पता जानना आवश्यक है। भौतिक विज्ञान ने इस प्रकार की खोज से अपनी जो उच्च सत्ता और शक्ति प्राप्त कर ली है, ठीक उसी प्रकार अध्यात्म विज्ञान भी अपनी परमोच्च स्थिति पर पहुँच सकता है।''

आध्यात्मिक चेतना ईश्वरीय शक्ति के प्रयास से फैलती है। इसमें मानवीय बुद्धि द्वारा किया गया प्रयास सार्थक सिद्ध नहीं हो सकता। मानवीय प्रयास को अधिक से अधिक वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित प्रचार से अधिक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मनुष्य अपने पूर्ण ज्ञान और शक्ति के सहारे काफी लम्बे समय तक आध्यात्मिक प्रचार चला सकता है। भौतिक साधनों के द्वारा निरन्तर लाखों लोगों को इकट्ठा कर सकता है।

परन्तु इस प्रकार चलाया गया कोई भी अभियान समाप्त होने के बाद कोई भी असर पीछे नहीं छोड़ता। इस प्रकार के असंख्य अभियानों से जब लोगों को कुछ भी परिणाम नहीं मिला तो लोग विमुख हो गये। इस प्रकार विमुख हुए लोगों की संख्या जब अधिक हो गई तो लोगों में विद्रोह की हिम्मत आ गई और धार्मिक गुरुओं का खुला विरोध होने लगा। क्योंकि इस युग के गुरुओं के पास जो वस्तु बची हुई है, उसके अलावा वे कुछ भी देने की स्थिति में नहीं है।

ऐसी स्थिति में दिन-दिन बिगड़ते हुए हालात को काबू करने के लिए, इस युग के धर्म गुरुओं ने प्रदर्शन, शब्दजाल,

तर्क बुद्धि और धन के सहारे विद्रोह को दबाने का प्रयास किया। ज्यों-ज्यों इस प्रक्रिया से धर्मगुरुओं ने अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास तेज किया, हालात काबू से बाहर हो गए। चन्द मरणासन्न स्त्री-पुरुषों के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं बचा। वे भी अपने जीवन भर के किये हुए कर्मों के भय से भयभीत होकर बचाव के लिए रह गये। अपनी ही तस्वीर से भयभीत ये शक्तिहीन असहाय लोग कुछ भी करने की स्थिति में नही हैं। धर्मगुरु भी अच्छी प्रकार समझते है कि जीवन भर इन्होंने जो अन्याय अत्याचार करके लूटा है, उसी का भय इनको बुरी तरह से खा रहा है। उनकी इस कमजोरी को अच्छी प्रकार समझते हुए धर्म गुरु इन्हें त्याग, तपस्या, दान-पुण्य, पाप आदि की व्याख्या अपने हिसाब से बताकर किसी प्रकार अपना बचाव करने में लगे हुए हैं।

''सृजन की शक्ति तो चढ़ते हुए सूर्य में होती है। इसी लिए संसार का मानव, उदय होते हुए सूर्य को नमस्कार करता है, कोई भी अस्त होते हुए सूर्य को नमस्कार नहीं करता। इस युग के शक्तिहीन और असहाय धर्मगुरु अस्त होते हुए सूर्य के सहारे कितने दिन तक जिन्दा रह सकेंगे, यह स्पष्ट बात है।'' जिस प्रकार डूबता व्यक्ति तिनके के सहारे नहीं बच सकता, ठीक उसी प्रकार यह कागज की नाव तो डूबेगी।

अब इसे बचाना असम्भव हो गया है। इतिहास साक्षी है, क्षीण होती हर सत्ता नई शक्ति के उदय होने का संकेत है। इस युग का मानव ऐसी किसी व्यवस्था में विश्वास नहीं करता जो कोई परिणाम नहीं देती। ईश्वर अगर है तो उससे सम्पर्क करके प्रार्थना करने पर निश्चित रूप से परिणाम मिलने चाहिए। परिणाम के अभाव में हमारे दिमाग में दो प्रश्न पैदा होते हैं या तो ईश्वर नाम की कोई शक्ति है ही नहीं, और अगर है तो हमारा संदेश उसके पास पहुँच ही नहीं रहा है। क्योंकि हमारे सभी संत कह गये है कि ईश्वर परम दयालू है। ईश्वर कृपा के उदाहरणों से हमारे धार्मिक ग्रन्थ भरे पड़े हैं।

हम देखते हैं, इस युग में प्रचलित आराधना पद्धति से की गई प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं मिल रहा है। इससे यही नतीजा निकलता है कि हमारे प्रार्थना पत्र पर पाने वाले का सही पता नहीं लिखा होता है। पता अगर ठीक होता तो उसका उत्तर निश्चित रूप से मिलता। अत: इस युग के मानव को अगर उस परम सत्ता की खोज करनी है तो उसका सही पता जानना आवश्यक है। भौतिक विज्ञान नें इस प्रकार की खोज से अपनी जो उच्च सत्ता और शक्ति प्राप्त कर ली है, ठीक उसी प्रकार अध्यात्म विज्ञान भी अपनी परमोच्च स्थिति पर पहुँच सकता है।

अब समय आ गया है कि, अब वह परमसत्ता स्वयं प्रकट होकर अपने प्रकट किये हुए भौतिक विज्ञान को अधीन करके संसार में स्वयं का सुख शान्ति का राज्य स्थापित करें। जब तक वह परम सत्ता स्वयं प्रकट होकर अपनी प्रकट की हुई ताकत को अपने अधीन संचालित नहीं करेगी, संसार में सुख शान्ति असम्भव है।

इस समय सारे भौतिक विज्ञान की उपलब्धियाँ, तामसिक शक्तियों के अधीन हैं। तामसिकता का गुणधर्म, हिंसा, घृणा, द्वेष और विनाश है। इन शक्तियों से सृजन की उम्मीद के बल पर आज तक कई प्रयास किये, परन्तु सृजन के स्थान पर निरन्तर संहार ही प्रगति करता रहा। इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही अनेक राजनेताओं ने शान्ति लाने का प्रयास किया, परन्तु वे इसमें पूर्ण रूप से असफल सिद्ध हुए। प्रथम विश्व महायुद्ध ने संसार में भयंकर नरसंहार और अशान्ति फैला दी। सारा संसार अशान्त और आतंकित हो गया। तब उन भौतिक सत्ता सम्पन्न राष्ट्राध्यक्षों ने संसार में शक्ति लाने हेतु राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशन्स) का निर्माण किया।

यह प्रयास भी असफल रहा, और दूसरा विश्वयुद्ध पहले से भी भयंकर हुआ। तब शान्ति लाने का और प्रयास करते हुए उन्होंने **'संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ) का निर्माण किया। परन्तु हम देख रहे हैं कि यू. एन. ओ. भी शान्ति लाने में पूर्ण रूप से असफल हो चुका है।**

संसार में इस समय एक भी ऐसा क्षण नहीं बीत रहा है, जिसमें भौतिक विज्ञान ने नरसंहार बन्द किया हो। वर्षों से संसार के किसी न किसी हिस्से में नर संहार और युद्ध निरन्तर जारी है। विश्व की सर्वोच्च शक्तियों के सभी प्रयास असफल हो रहे हैं। संसार में अब तो हर क्षेत्र में नरसंहार प्रारम्भ हो गया है। दोनों विश्व युद्धों से भी अधिक विनाश रात दिन संसार में हो रहा है। सभी बहिर्मुखी बौद्धिक प्रयास असफल हो चुके हैं। क्योंकि शान्ति अन्दर से आती है, **शान्ति का सम्बन्ध दिल से है।**

अत: **अन्तर्मुखी** आराधना से उस परम सत्ता से जुड़े बिना शान्ति असम्भव है। मैं प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर रहा हूँ कि जो विकास मेरे तथा मेरे गुरुदेव में हो चुका है, वह आध्यात्मिक और

''सृजन की शक्ति तो चढ़ते हुए सूर्य में होती है। इसी लिए संसार का मानव, उदय होते हुए सूर्य को नमस्कार करता है, कोई भी अस्त होते हुए सूर्य को नमस्कार नहीं करता। इस युग के शक्तिहीन और असहाय धर्मगुरु अस्त होते हुए सूर्य के सहारे कितने दिन तक जिन्दा रह सकेंगे, यह स्पष्ट बात है।'' जिस प्रकार डूबता व्यक्ति तिनके के सहारे नहीं बच सकता, ठीक उसी प्रकार यह कागज की नाव तो डूबेगी। अब इसे बचाना असम्भव हो गया है। **इतिहास साक्षी है, क्षीण होती हर सत्ता नई शक्ति के उदय होने का संकेत है।** इस युग का मानव ऐसी किसी व्यवस्था में विश्वास नहीं करता जो कोई परिणाम नहीं देती। ईश्वर अगर है तो उससे सम्पर्क करके, प्रार्थना करने पर निश्चित रूप से परिणाम मिलने चाहिए। परिणाम के अभाव में हमारे दिमाग में दो प्रश्न पैदा होते हैं या तो ईश्वर नाम की कोई शक्ति है ही नहीं, और अगर है तो हमारा संदेश उसके पास पहुँच ही नहीं रहा है। क्योंकि हमारे सभी संत कह गये है कि ईश्वर परम दयालू है। ईश्वर कृपा के उदाहरणों से हमारे धार्मिक ग्रन्थ भरे पड़े हैं।

भौतिक जगत् में प्रत्यक्ष परिणाम दे रहा है। मुझ से जुड़ने वाले सभी लोगों को वह परम आनन्द और परम शान्ति मिल रही है।

जिसको कि विभिन्न संतों ने ''नाम खुमारी'' और ''नाम अमल'' की संज्ञा दी हैं। मैं तथा मेरे गुरुदेव जितना आरोहण कर चुके हैं, उस पथ की यात्रा में मुझसे जुड़ने वाले लोगों को किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हो रही है।

उन्हें इस आरोहण में जिन विचित्र-विचित्र लोकों की प्रत्यक्षानुभूतियाँ हो रही है, उससे सभी आनन्द विभोर हो रहे हैं। मूलाधार से लेकर **अगम लोक**, जहाँ तक वे पहुँच सके हैं, हमारे ऋषियों द्वारा वर्णित सभी बातों की प्रत्यक्ष उपलब्धि हो रही है। इसके साथ-साथ सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर से सम्बन्धित अनेक प्रकार की घटनाएँ, आध्यात्मिक शक्तियाँ पहले बता रही है। और सभी क्रमिक रूप से भौतिक जगत् में सत्यापित हो रही हैं। इससे इन दोनों शरीरों के अन्दर 'आत्मा' की बात हमारे संतों ने जिस प्रकार बताई है, उसके भी स्पष्ट चिह्न जिन्हें मैं बहुत पहले देख चुका हूँ, मेरे अनुयाइयों को प्रत्यक्ष रूप से मिल रहे हैं।

भौतिक जगत् में जिन आध्यात्मिक बातों को आज तक मानव केवल मनघड़ंत और काल्पनिक मानता है, वे सभी असंख्य प्रमाणों सहित सत्य प्रमाणित हो रही हैं। मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र तक के माया के जगत् की सभी शक्तियों की प्रत्यक्षानुभूति, त्रिगुणमयी माया (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) सहित हो रही हैं। ये सभी शक्तियाँ भौतिक जगत् में भी सत्यापित हो रही हैं। आज्ञाचक्र से ऊपर के लोक पूर्ण रूप से सात्त्विक है तथा यहाँ शब्द का रूप बदल कर निरन्तर सूक्ष्म रूप धारण करता जाता है। अतः इनकी प्रत्यक्षानुभूतियाँ पूर्ण रूप से मानवीय भाषा में व्यक्त नहीं की जा सकती।

पूरे प्रयास के बावजूद सभी अन्त में यही कह देते हैं कि जो कुछ हम देख रहे है, सुन रहे हैं और अनुभव कर रहे है, उसे हम भाषा द्वारा व्यक्त करने में अपने आपको असमर्थ महसूस कर रहे हैं। मुझे बहुत बार लोग पूछते हैं कि क्या इन रहस्य पूर्ण बातों को कभी मानवीय भाषा में बताना सम्भव होगा।

मैं उन्हें हमेशा एक ही उत्तर देता हूँ कि मैंने तुम्हें प्रारम्भ में ही बता दिया था कि अध्यात्म ज्ञान प्रत्यक्षानुभूतियों और साक्षात्कार का विषय है। इसमें मानवीय बुद्धि और ज्ञान कुछ भी सहयोग देने की स्थिति में नहीं है। यही कारण है मैंने आप लोगों को आज तक कोई उपदेश नहीं दिया, कोई कर्मकाण्ड या बहिर्मुखी आराधना की भी सलाह नहीं दी। ''मैंने हमेशा यही बात कही कि इस जगत् में प्रेम सद्भाव, समर्पण, दया और सात्त्विक भाव से ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है।'' संसार के भौतिक वैभव से यह प्राप्त होने वाला ज्ञान नहीं है।

भौतिक सत्ता तो अधिनस्थ बहुत ही छोटी शक्ति है। मैं देख रहा हूँ, तीनों शरीरों को भेद कर जिसने आत्मा का क्षणिक प्रकाश देख लिया, उसे पिछले जन्म का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार आत्मा से जितना प्रगाढ़ सम्बन्ध होगा, उसी के अनुसार उसे पिछले कई जन्मों का ज्ञान होना सम्भव है। इस प्रकार हमारे धर्म का पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी भौतिक रूप से सत्यापित किया जा सकता है।

आज मेरे माध्यम से जो कुछ हो रहा है, वह ईश्वर की कृपा और गुरुदेव के आशीर्वाद का परिणाम है। प्रारम्भ से लेकर मेरे जीवन के अन्तिम तक के बारे में मुख्य-मुख्य सभी कार्यों का स्पष्ट आदेश, उस परम सत्ता ने दे दिया है। मैं सप्रमाण पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ। इसके अलावा वह पूर्ण सत्ता पग-पग पर पूर्णरूप से मेरा पथ प्रदर्शन कर ही है। मुझ से जुड़ने वाले लोगों से सम्बन्ध स्थापित करने वाले सभी जिज्ञासु लोगों में भी वह सात्विक करण्ट अनायास दौड़ने लगता है।

-सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
5 मार्च 1988

मूलोद्गम् एक है-वह है परमसत्य की संपूर्णता

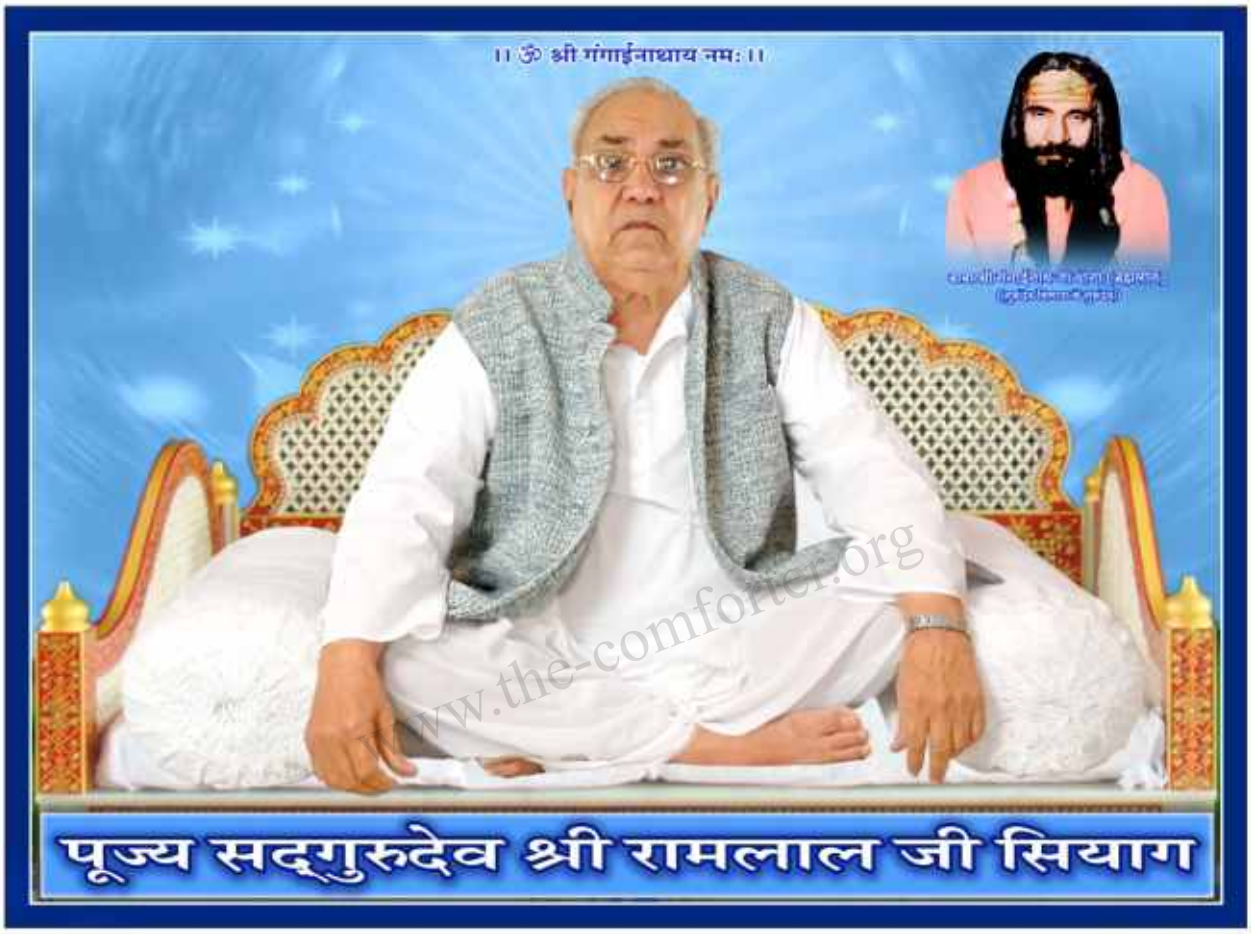

सब ठीक करने का एकमात्र उपाय है, पुनः चेतना प्राप्त करना;
और वह बिल्कुल सरल है।
मूलोद्गम एक है, वह है परमसत्य की संपूर्णता,
क्योंकि एकमात्र वही एक वस्तु है जो वस्तुतः अस्तित्व रखती है।
और अपने स्वरूप से बाहर निकल कर,
बाहर अपना विस्तार करके, इधर-उधर विकीर्ण होकर,
उसने उस सब की सृष्टि की, जो हमें नजर आ रहा है,
और बनाये वे छोटे-छोटे, अत्यंत उदार,
अत्यंत प्रतिभावान्, **अनगिनत मस्तिष्क,**
जो उसकी खोज में व्यस्त हैं,
जिसका वे अभी पता नहीं लगा पाये,
किन्तु लगा सकते हैं, क्योंकि जिसकी खोज वे कर रहे हैं,
वह उनके अंदर है। **रोग की दवा रोग के अंदर है।**

संदर्भ-श्री अरविन्द आश्रम की श्रीमां
'चेतना की अपूर्व यात्रा' पृष्ठ-191-192

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, शाखा–मुम्बई द्वारा अश्विनी हॉस्पीटल में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविर में ध्यान मग्न मरीज। (जनवरी–फरवरी 2020)

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, ग्राम–नया खेड़ा, बूंदी रोड़, कोटा में आयोजित ध्यान सिद्धयोग शिवर। (18–2–2020)

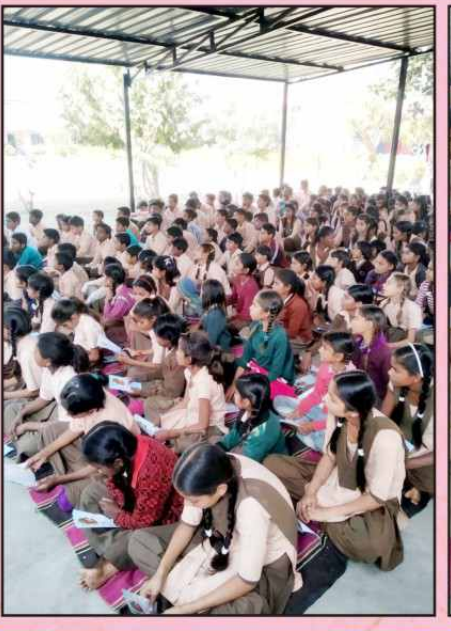
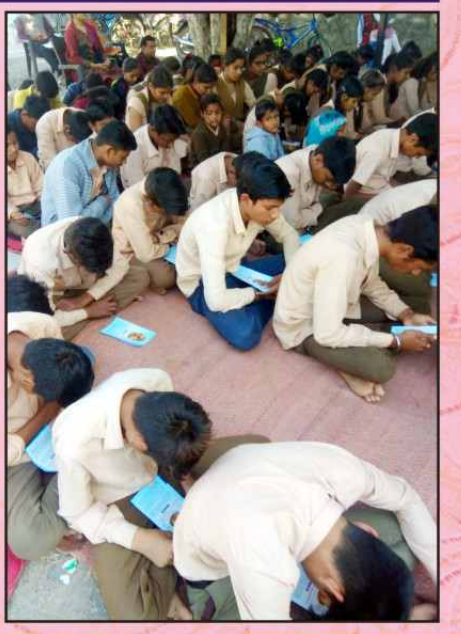

बालोद (छत्तीसगढ़) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (15 से 19 फरवरी 2020)

बालोद (छत्तीसगढ़) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (15 से 19 फरवरी 2020)

जैतारण (पाली) व नागौर के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (18 व 19 फरवरी 2020)

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

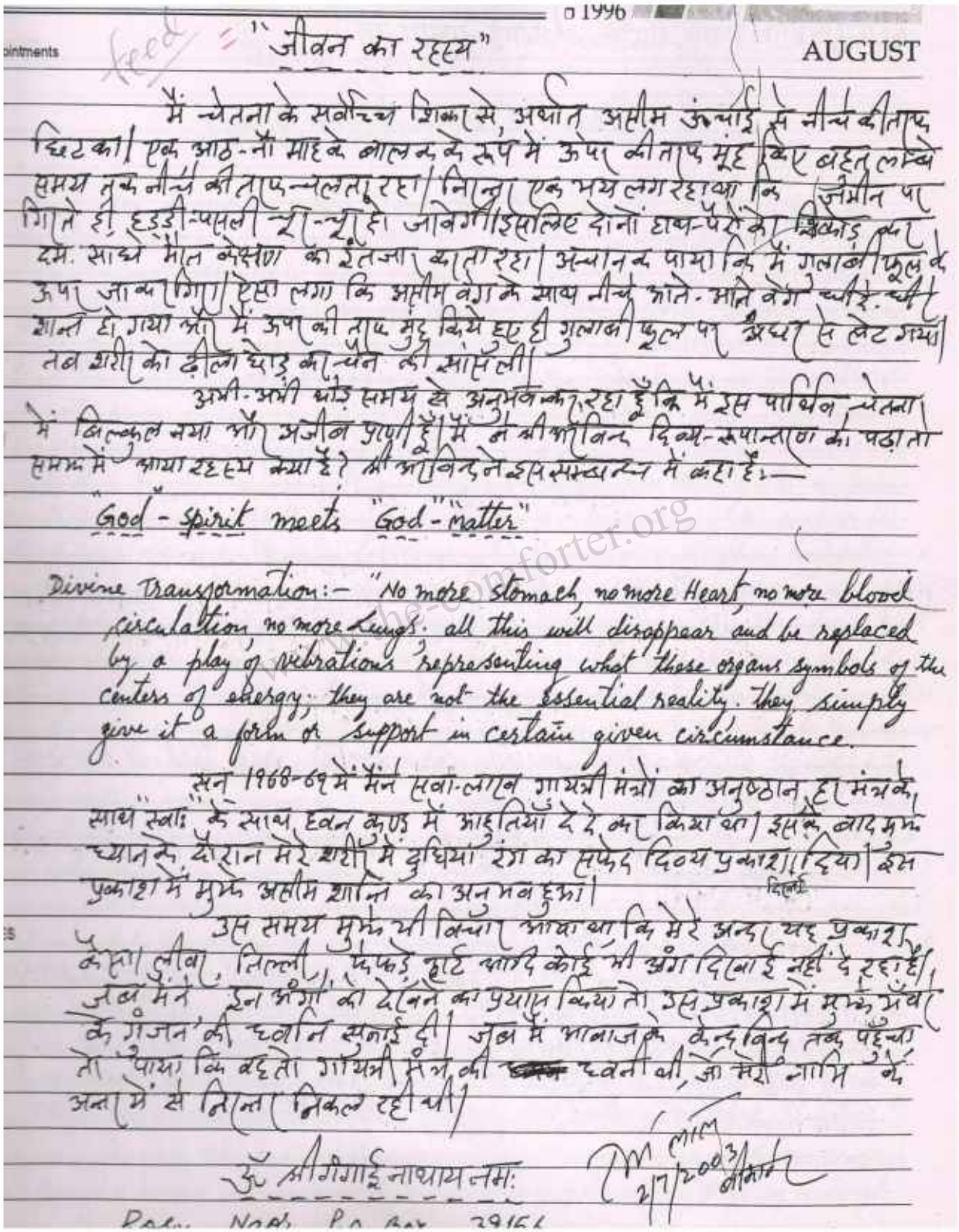

1996

AUGUST

feed = "जीवन का रहस्य"

मैं चेतना के सर्वोच्च शिकर से, अर्थात असीम ऊंचाई से नीचे की तरफ छिटका। एक आठ-नौ माह के बालक के रूप में ऊपर की तरफ मुंह किए बहुत लम्बे समय तक नीचे की तरफ चलता रहा। निरन्तर एक भय लग रहा था कि जमीन पर गिरते ही हड्डी-पसली चूर-चूर हो जावेगी। इसलिए दोनों हाथ-पैरों को सिकोड़ कर दम साधे मौत के क्षण का इंतजार करता रहा। अचानक पाया कि मैं गुलाबी फूल के ऊपर जा कर गिरा। ऐसा लगा कि असीम वेग के साथ नीचे आते-आते वेग धीरे-धीरे शान्त हो गया और मैं ऊपर की तरफ मुंह किये हुए ही गुलाबी फूल पर अधर से लेट गया। तब शरीर को ढीला छोड़ कर चैन की सांस ली।

अभी-अभी थोड़े समय से अनुभव कर रहा हूँ कि मैं इस पार्थिव चेतना में बिल्कुल नया और अजीब प्राणी हूँ। मैं ने श्री अरविन्द दिव्य-रूपान्तरण को पढ़ा तो समझ में आया रहस्य क्या है? श्री अरविन्द ने इस सम्बन्ध में कहा है:—

"God" - spirit meets "God" - "matter"

Divine Transformation:- "No more stomach, no more Heart, no more blood circulation, no more Lungs. all this will disappear and be replaced by a play of vibrations representing what these organs symbols of the centers of energy; they are not the essential reality. they simply give it a form or support in certain given circumstance.

सन् 1968-69 में मैंने सवा-लाख गायत्री मंत्रों का अनुष्ठान हर मंत्र के साथ "स्वाः" के साथ हवन कुण्ड में आहुतियाँ दे दे कर किया था। इसके बाद मुझे ध्यान के दौरान मेरे शरीर में दुधिया रंग का सफेद दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। इस प्रकाश में मुझे असीम शान्ति का अनुभव हुआ।

उस समय मुझे भी विचार आया था कि मेरे अन्दर यह प्रकाश कैसा। लीवर, तिल्ली, फेफड़े, हार्ट आदि कोई भी अंग दिखाई नहीं दे रहा है। जब मैंने इन अंगों को देखने का प्रयास किया तो उस प्रकाश में मुझे भँवर के गुंजन की ध्वनि सुनाई दी। जब मैं आवाज के केन्द्रबिन्दु तक पहुँचा तो पाया कि वह तो गायत्री मंत्र की ध्वनी थी, जो मेरी नाभि के अन्तर में से निरन्तर निकल रही थी।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

[signature] लाल 2/7/2003 बीकानेर

Resp. Nagr. P.O. Box 29156

www.the-comforter.org

कहानी

नेकी कर दरिया में डाल

सेठ रामबिलास जी का घराना बहुत ऊँचा समझा जाता था। ये पीढ़ियों के सेठ थे। गाँव में इनकी बड़ी इज्जत थी। विधाता का विधान, कमाई कम हो गयी। खर्च में कमी हुई नहीं। घर कमजोर होता गया। इनके परिवार में बहुत लोग थे। सबका पालन-पोषण इन्हीं के द्वारा होता था। धीरे-धीरे सब अलग हो गये। इनके एक कन्या विवाह के योग्य थी। बड़ी सुशील, सुन्दर और घर के काम-काज में चतुर। गीता-रामायण पढ़ लेती थी। उस जमाने में छोटी उम्र में लड़कियों के विवाह होते थे। ये अपनी एकमात्र कन्या को अच्छे सम्पन्न घर में देना चाहते थे। इनका नाम तो बड़ा था ही। एक जगह सगाई हो गयी। लड़का बहुत अच्छा, सुन्दर, पढ़ा-लिखा। लाखों का कारोबार। विवाह की तैयारी होने लगी ! कमाई घटी थी, इससे घर नोच-नाचकर ये खा रहे थे। जेवर आदि बहुत कुछ बिक चुका था। विवाह इज्जत के साथ होना चाहिये।

यद्यपि लड़के वाले बहुत भले आदमी थे। वे कुछ सौदा नहीं करते थे तथापि इतनी तो आशा रखते ही थे कि सेठ रामबिलासजी अपनी कन्या का विवाह बहुत अच्छा करेंगे। अच्छे का अर्थ-कम-से-कम दस हजार तो लगाएंगे ही। रामबिलास जी भी इससे कम नहीं लगाना चाहते थे। उस जमाने के दस हजार आज के लाखों के बराबर समझिये।

रामबिलास जी ने किसी तरह आठ हजार का प्रबन्ध किया। चार हजार नगद आ गये, जिससे गहना बनने लगा। सोना उस समय बीस रुपये तोला था। एक व्यापारी के यहाँ कई हजार रुपये थे। उसे अमुक दिन चार हजार देने का वचन दे दिया था। दो हजार शेष थे-उनकी व्यवस्था भी हो ही जायेगी। कुछ बाजार का देना रहेगा तो वह धीरे-धीरे दे दिया जायेगा, यह सोचकर सेठ रामबिलास जी तथा उनकी धर्मपत्नी निश्चिन्त थे। अकस्मात् उस व्यापारी के गल्ले में घाटा लग गया, उसने देने से इनकार कर दिया। **वास्तव में वह बेचारा असमर्थ हो गया था।** रामबिलास जी के सिर पर तो माना वज्र का पहाड़ टूट पड़ा। कहीं से कोई आशा नहीं, बड़े नामी आदमी, किसी से माँग नहीं सकते। माँगने पर दे भी कौन ?

उनके पड़ोस में बाबू हरनारायण जी का घर था। **बड़े सज्जन थे-दोनों स्त्री-पुरुष।** रामबिलास जी के साथ इनका बड़ा मेल था। एक दिन हरनारायण जी की स्त्री किसी काम से इनके घर आयी थी। रामबिलास जी उस समय अपनी पत्नी से रोते हुए कुछ कह रहे थे-हरनारायण जी की पत्नी सुनना नहीं चाहती थी, उनके घर से वापस लौट रही थी, **पर इतनी-सी आवाज कान में पड़ गयी .... सीता की माँ, अब रामबिलास मुँह नहीं दिखा सकता। वह न किसी से माँगेगा, न किसी के देने पर लेगा ही। आज तक पीढ़ियों से दिया-ही-दिया, कभी हाथ नहीं फैलाया।** अब क्या पुरखों के मुख पर कालिख पोतेगा वह ... पर छह हजार लाएगा कहाँ से ? अगली बात सुनी नहीं; इतना पता अवश्य लग गया कि सीता की माता (रामबिलास जी की पत्नी) फूट-फूटकर रो रही थी। सीता रसोई घर में थी।

बाबू हरनारायण की पत्नी बड़ी साध्वी तथा **दयार्द्र हृदया थी** और सीता की माता से उसका बड़ा प्रेम था। हरनारायण जी भी बड़े सहृदय थे और घर भी सम्पन्न था। हरनारायण जी की पत्नी आते ही रोने लगी। हरनारायण ने पूछा-पर बता नहीं सकी, उसकी घिग्घी बँध गयी। कुछ देर बाद **धैर्य धारण** कर उसने कहा-'सीता का विवाह है। एक दिन सीता की माता ने उसे बताया था कि आठ हजार का प्रबन्ध कर लिया गया, दो हजार का और हो जायेगा। पर आज मैं सुनकर आयी हूँ-उन्हें छह हजार की जरूरत है। वे दोनों पति-पत्नी प्राण दे देंगे। अपने पास रुपये हैं-आप दे दीजिये।'

पत्नी की बात बाबू हरनारायण को बहुत अच्छी लगी और मन-ही-मन उसकी सहृदयता तथा स्वभाव की सराहना करते हुए हरनारायण जी ने कहा-'मैंने पहले कुछ चेष्टा की थी, पर सेठ रामबिलास जी ने स्वीकार नहीं किया। वे मुझसे लेकर अपना मान खोना नहीं चाहते और मैं भी उनकी बड़ी इज्जत करता हूँ।' पत्नी बोली-'तो दूसरा कोई उपाय सोचिये और आज ही-अभी कीजिये। देर से अनर्थ हो जायेगा। डगमगाती नैया को तुरंत बचाइये।'

'अच्छी बात है' कहकर हरनारायण जी निकले और डेढ़ घंटे बाद लौटकर पत्नी से उन्होंने

बतलाया-'**तुम्हारी सदिच्छा भगवान् ने पूर्ण कर दी।**' मैंने पता लगाया तो मालूम हुआ अमुक व्यापारी से उन्हें चार हजार मिलने वाले थे, उसने घाटा लगने से इनकार कर दिया। मैं सीधा उसके पास पहुँचा। उससे बात की। वह बेचारा भी रुपये न दे सकने पर बहुत दु:खी था। उसने बतलाया कि 'चार ही नहीं, छह हजार मुझको देने हैं। मैंने चार ही देने को कहा था, पर दे नहीं पाया।' ?

मैंने उसको यह समझाकर इस बात पर राजी कर लिया कि वह छह हजार रुपये लेकर तुरंत सेठ रामबिलास जी को यह कहकर दे आये कि 'मैंने रुपयों का प्रबन्ध कर लिया है और आपके हिसाब के छह हजार रुपये दे रहा हूँ।' मैंने उसको यह आश्वासन दे दिया कि 'मैं ये रुपये आपसे कभी माँगूँगा नहीं, न आपके नाम की खाते में लिखूँगा। आपके पास कभी हो और आप देना चाहें तो दे दीजियेगा, नहीं तो, **आपका घाटा मेरा ही घाटा है।** आप जरा भी विचार न कीजियेगा।' वह सकुचाया तो सही, पर मान गया। मैंने उसको रुपये देकर तुरंत सेठ रामबिलास जी के पास भेज दिया और वह दे भी आया।

मैंने उसको पुत्र की शपथ दिलवा दी कि वह '**यह बात कभी किसी से कहेगा नहीं।**' अपने घर में भी हम दो ही जानते हैं। हम लोग भी शपथ कर लें कि '**तीसरा कोई जाने ही नहीं।**' स्वामी की बात सुनकर पत्नी के प्राण हरे हो गये। उसके आनन्द का पार नहीं रहा। उसने आनन्द की अश्रुधारा से अपने स्वामी के चरण पखार दिये।

सेठ रामबिलास जी और उनकी पत्नी को कितना आनन्द हुआ, कौन जान सकता है। सीता का विवाह बड़े ही धूमधाम से हो गया। बाबू हरनारायण तथा उनकी पत्नी विवाह में सम्मिलित हुए। सब काम किये; पर कहीं यह जरा-सी भी कल्पना नहीं आने दी कि 'व्यापारी के दिये रुपयों से इनका कोई सम्बन्ध है; वे मानो भूल ही गये। '**उपकार (भलाई) करके भूल जाना और अपकार (बुराई) होने पर उसे याद रखना ही तो मनुष्यता है।**' कई वर्षों बाद उस व्यापारी ने एक दिन सेठ रामबिलास जी को यह घटना तब सुनायी, जब रामबिलास जी उसके व्यवहार की बड़ाई कर रहे थे।

वास्तव में भारतीय इतिहास इस प्रकार की गौरवमयी और आदर्शमयी गाथाओं से भरा पड़ा है। वही धन काम का है जो किसी जरूरतमंद के काम आये, सत्कार्य में लगे। अपना पेट तो पशु भी पालते हैं।

गुरुदेव कई बार कहते थे कि '**नेकी कर दरिया में डाल**' अर्थात् **किसी का भला कर भूल जाओ।** यही सबसे उत्तम विचार और नीति है। इस नीति से आत्मा को जो अपार आनंद मिलता है; वह अकल्पनीय है।

दान देने के संबंध में बाइबिल में लिखा है-

Metthew (6:1 to 6:4);

1.**TAKE** heed that ye do not your alms before men, to be seen of them: otherwise ye have no reward of your father which is in **heaven**.

2. Therefore when thou doest thine alms, do not **sound** a trumpet before thee, as the **hypocrites** do in the **Synagogues** and in the streets, that they may have **glory** of men, verily I say unto you. They have their reward.

3. But when thou doest alms, let not thy **left hand** know what thy **right hand** doeth:

4. That thine alms may be in **secret**: thy father which seeth in secret himself shall reward thee openly.

भावार्थ-

1 इस बात का ध्यान रखो कि जो भी आप दान कर रहे हो, उसका लोगों के सामने दिखावा मत करो अन्यथा तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है, तुम्हें उसका कोई पुरस्कार नहीं देगा।

2 इसलिए जब भी आप दान करो तो उसका शोर मत करो, दिखावा मत करो जैसा कि पाखण्डी लोग करते हैं।

3. लेकिन जब आप दान करते हो तो आपके बायें हाथ को पता नहीं चलना चाहिए कि आपका दायां हाथ क्या कर रहा है ?

4. तब हो सकता है तुम्हारा दान गुप्त हो लेकिन तुम्हारा पिता जो तुम्हें गुप्त रूप से देख रहा है, वह इसका पुरस्कार आपको खुले रूप से देगा।

❖❖❖

www.the-comforter.org

हिन्दी-अंग्रेजी शब्दावली

आध्यात्मिक आराधना में होने वाली अनुभूतियों व भीतर के प्रस्फुटित ज्ञान को कुछ शब्दों में व्यक्त किया गया है जो समय समय पर साधकों को पढ़ने या सुनने को मिलता है। कुछ साधकों या जिज्ञासुओं को इन शब्दों का वास्तविक अर्थ मालूम नहीं होता है। जिज्ञासुजनों के सामान्य ज्ञान-बोध के लिए हिन्दी-अंग्रेजी शब्दावली दी जा रही है, जिनसे आध्यात्मिक शब्दों को समझने में मदद मिलेगी।

शब्द	भावार्थ	English Meaning
अंत:प्रकाश	अंदर से स्फुरित होनेवाला ज्ञान	Revelation
अंतदर्शन/ अंतर्दृष्टि	अंदर की दृष्टि से कुछ देखना	Vision
अंतर्भास/अंतर्भासात्मक	सहसा ऊपर से आनेवाली ज्ञान की चमक	Intuition/ Intuitive
अंतर्लयन	भगवान् का अपने-आपको एक ऐसे अवरोहण में छिपाना जिसकी सबसे निचली सीढ़ी है-भौतिक पदार्थ	Involution
अंतर्लीन	पहले से अंदर मौजूद	Involved
अंतर्लीन सत्ता	उपरितल के पीछे हमारी गहरी सत्ता	Subliminal
अंतवर्ती / मध्यवर्ती	बीच की स्थिति	Transitional
अंतर्वस्तु	वस्तु के अंदर का तत्त्व	Contents
अक्षर	अविनाशी, जिसका कभी अंत नहीं होता	Immutable
अतिचेतन	सामान्य मनोमय चेतना से ऊपर की स्थिति	Superconscient
अतिमानव	मनुष्य के स्थान पर आगे आने वाली मनुष्य से ऊँची सत्ता	Superman
अतिमानस	मन से परे का स्तर	Supermind
अतिवैश्व	विश्व के परे का लोक	Supracosmic
अतींद्रिय	अगोचर-इंद्रियो की पहुँच से परे	Metaphysical
अत:स्तर	नीचे का स्तर, आधार	Substratum
अधिमन	मन का सबसे ऊपर का और अतिमन के निकट का स्तर	Overmind
अधिरचना	ऊपरी ढाँचा	Superstructure
अधिरचनात्मक	ऊपरी ढाँचा	Superstructural
अधिसामान्य	सामान्य से ऊपर का स्तर	Supernormal

www.the-comforter.org

"विश्वास"

विश्वास मात्र एक बौद्धिक प्रक्रिया नहीं है, विश्वास मन का एक बहकाव मात्र भी नहीं है, **विश्वास एक ऐसी वस्तु है जो हमारे हृदय में रहती है** और जिस बात का तुम विश्वास करते हो, उसे तुम्हें करना ही चाहिए क्योंकि विश्वास ईश्वर की देन है। हृदय से ही ईश्वर बात करता है, हृदय में ही ईश्वर का वास है।... तुमने एक काम हाथ में लिया है, वह काम इतना विराट है, इतना विलक्षण, पर उसके लिए साधन इतने अपर्याप्त हैं, उसका विरोध इतना जोरदार होगा, इतने संगठित रूप से।... और तुम्हारे पास क्या साधन हैं जिनसे तुम अपने इस भारी काम को पूरा कर पाओगे?

यदि इस पर तुम बौद्धिक रूप से विचार करोगे तो तुम्हें कोई आशा नहीं दिखलाई पड़ेगी।... यह बौद्धिक प्रक्रिया, यदि उसका इमानदारी से प्रयोग किया जाए, यदि बिल्कुल छोर तक उसका अनुसरण किया जाए तो वह तुम्हें निराशा तक ले जाती है। वह तुम्हें मरण तक ले जाती है।

वह कौन-सी ऐसी चीज है जो जरूरी है? किस बात ने उन (नेशनलिस्ट आंदोलन) के पुराने लोगों की मदद की है जो जेल गये?... उन सभी के पास जाने-अनजाने एक ही **सर्वोपरि** विचार था कि **भारत की सहायता करने के लिए एक महान शक्ति क्रियाशील है**, और हम वही कर रहे हैं, जो वह हमें करने को कहती हैं।... उन्हें भीतर से यह विश्वास है, बुद्धि में नहीं, बल्कि हृदय में, कि जो शक्ति उनका मार्गदर्शन कर रही है वह अजेय है, वह सर्वशक्तिमान है। वह अमर और अबाध है और वह अपना काम करके रहेगी। उन्हें कुछ नहीं करना है, बस उस शक्ति के आदेशों का सीधे-सीधे पालन करते जाना है। जहाँ वह ले जाए वहाँ बस चले जाना है। जो शब्द वह बोलने को कहे उन्हें केवल बोल देना है और जो काम वह करने को कहे उसे बस कर देना है।... परमात्मा स्वयं हमारे पीछे है। वह स्वयं कार्य करनेवाला भी है और कार्य भी वही है। अपने लोगों के हृदयों में वह अमर है।

जब तुम ईश्वर में विश्वास करते हो, जब तुम यह विश्वास करते हो कि ईश्वर तुम्हारा मार्ग-दर्शन कर रहा है, वही सब कुछ कर रहा है, तुम कुछ नहीं करते - तो फिर डर किस बात का?... किसी बात का डर नहीं।... ये सारे न्यायाधिकरण, विश्व की सारी शक्तियाँ, उसका क्या बिगाड़ सकती हैं जो तुम्हारे भीतर विद्यमान है, वह अमर तत्त्व, जो न जन्म लेता है और न मरता है, जिसे तलवार भेद नहीं सकती, अग्नि जला नहीं सकती, और न पानी डुबा ही सकता है? उसे जेल बंदी नहीं बना सकता और न फाँसी ही उसका अंत कर सकती है।

जब तुम्हें उसका बोध हो जाता है जो तुम्हारे भीतर है तो फिर तुम्हें डर किसका? फिर तो साहस की ही आवश्यकता है, साहस स्वाभाविक भी है और वह अपरिहार्य भी है। जीवन में भी और मरण में भी तुम्हारी वह रक्षा करता है, जो मृत्यु की घड़ी में भी टिका रहता है। तुम्हें अपनी अमरता का एहसास उस घड़ी में होता है जब तुम भारी से भारी यंत्रणा सह रहे होते हो, तुम महसूस करते हो कि तुम अजेय हो। अपने भीतर शक्ति का अनुभव करने का प्रयास करो, उसे आगे लाने का यत्न करो, **जिससे कि प्रत्येक काम जो तुम करो, उसमें तुम्हारा कर्तृत्व न रहे, बल्कि उस सत्य का कर्तृत्व रहे जो तुम्हारे भीतर है।** ऐसी कोशिश करो कि प्रत्येक घड़ी जो तुम जीवित रह कर बिताओ वह उसकी उपस्थिति से आलोकित हो जाए, कि तुम्हारा प्रत्येक विचार प्रेरणा के उसी एक स्रोत से प्रेरित हो; तुम्हारे भीतर निहित प्रत्येक मन:शक्ति और गुण तुम्हारे अंतर की उस अमर शक्ति की सेवा में अर्पित कर दी जाए।... नेता तो तुम्हारे भीतर स्वयं विराजमान है।

संदर्भ- "भारत का पुनर्जन्म"
पुस्तक पृष्ठ-35-36 पर

उन्हें भीतर से यह विश्वास है, बुद्धि में नहीं, बल्कि हृदय में, कि जो शक्ति उनका मार्गदर्शन कर रही है वह अजेय है, वह सर्वशक्तिमान है। वह अमर और अबाध है और वह अपना काम करके रहेगी। उन्हें कुछ नहीं करना है, बस उस शक्ति के आदेशों का सीधे-सीधे पालन करते जाना है। जहाँ वह ले जाए वहाँ बस चले जाना है। जो शब्द वह बोलने को कहे उन्हें केवल बोल देना है और जो काम वह करने को कहे उसे बस कर देना है। परमात्मा स्वयं हमारे पीछे है। वह स्वयं कार्य करनेवाला भी है और कार्य भी वही है। अपने लोगों के हृदयों में वह अमर है।

અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ

સિદ્ધયોગ સાધનામાં પાળવાના નિયમો

(૧) સાધકે ગુરુદેવ સિયાગ પ્રતિ સંપુર્ણ શ્રદ્ધા અને સમર્પણ ભાવ રાખવો સાધકની શ્રદ્ધા અને સમર્પણ જેટલી વધારે હોય તેટલા જ પ્રમાણમાં એને સાધના સફળ થાય છે. જેમબેંક ખાતામાં જીટ્ટદ્દૈહષ્ન નું રોકાણ ઓછું હોય તો ઓછું વ્યાજ મળે અને વધારે રોકાણ હોય તો વધારે વ્યાજ મળે તેમશ્રદ્ધાના પ્રમાણમાં તેનું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. ગુરુ પર શ્રદ્ધા ના હોય તો કા તો ઓછી હોય તો મંત્રજાપ અને ધ્યાનની અસર જેવી જોઈએ તેવી થતી નથી.

(૨).ગુરુદેવ પાસેથી દીક્ષા લીધા પછી એનું ઈચ્છિત પરિણામમેળવવા માટે સંપુર્ણ શ્રદ્ધા, એકાગ્રતા અને ખંત સિદ્ધયોગ સાધના કરવી. આ સાધના દરમિયાન બીજા કોઈ સંત, ગુરુ, બાબા, ભુવા, તાંત્રિક, માંત્રિક કે ફકીરની પાછળ જવું નહી. પોતે સ્વીકારેલ ગુરુ પર અડીખમરહેવું અને તેની જ આરાધના કરવી. અલગ અલગ ગુરુઓ પાછળ પડવાથી શ્રદ્ધા વહેંચાઈ જાય છે. પરિણામે સાધકના હાથમાં કંઈ જ આવતું નથી. દા.ત. એક ડૉકટરનો અલાજ ચાલતો હોય ત્યારે આપણે બીજા ડૉકટરનો ઈલાજ કરતા નથી. કારણ બંનેની દવા અને ટ્રીટમેન્ટ મીક્ષ થાય તો બીમારી દુર થવાને બદલે વધુ વણસી જવાની શકયતા છે. એટલે એક જ ગુરુ પર શ્રદ્ધા રાખીને સાધના કરવી.

(૩).સિદ્ધયોગ સાધના એ ઈશ્વર પ્રાપ્તિનો સર્વોત્તમમાર્ગ છે. કારણ કે જે બ્રહ્માંડમાં જે તેત્રીસ કરોડ દેવી - દેવતા પૂજાય છે એવા દેવોના દેવ મહાશિવ પાસે સિદ્ધયોગ નો સંતો જાય છે. જેમઆપણને ઝડપી પ્રવાસ માટે હાઈવે મળી ગયો હોય તો આપણે નાના સંતાઓ અને ગલીઓમાં જતાં નથી. એ જ પ્રમાણે સિદ્ધયોગનો સંતો મળઅયા પછી નાના મોટા કર્મકાંડ, મંદિરોના આંટાફેરા અને યાત્રા ધામપ્રવાસ વગેરેની જરૂર રહેતી નથી. બીજા ગુરુઓ કે સંતો અને કર્મકાંડ કરતા લોકો પ્રતિ આદરભાવ જરૂર રાખવો પરંતુ સિદ્ધયોગનો માર્ગ છોડવો નહી.

(૪).સિદ્ધયોગ સાધના એટલે સાક્ષાત ઈશ્વરના અલૌકિક તેની સાધના છે.તેની સામે કોઈ પણ ભૂત-પ્રેત, વળગાડ કે જાદુટોનાની અસર થતી નથી. એથી જ ગુરુદેવ સિયાગના શિષ્યે કોઈ પણ પ્રકારના ધાગા, દોરા, તાવીજ કે યંત્રોના બંધનમાં ફસાવું નહી. આ પ્રકારની કાલા જાદુ અથવા તાંત્રિક, માંત્રિક પાસે જવાથી સિદ્ધયોગ સાધનામાં ખલેલ પડે છે અને સાધક ગંભીર પ્રકારની મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડે છે.

(૫).સિદ્ધયોગ સાધના કરતી વખતે કોઈ બીમારીના કારણે ડૉકટર કે વૈદ્યની દવા લેવી પડે તો જરૂર લેવી. પરંતુ દવાને વળગીના રહેવું. સાધક જેટલી શ્રદ્ધાથી ગુરુદેવને રોગમુક્તિ માટે પ્રાર્થના કરશે એટલા જ ઝડપથી એની બીમારી દવા લીધા વગર મટી ગયાનો અનુભવ તેને થશે. ડૉકટરોએ જે દર્દીઓને જીવતા રહેવાની આશા છોડી દે દીધી હોય આવા અસંખ્ય દર્દીઓ ગુરુદેવ સિયાગના શરણે આવ્યા પછી મૃત્યુના કાંઠેથી પાછા ફરી અને સાજા થઈને નોર્મલ જીવન જીવી રહ્યા છે.

(૬).ભારતીય ધર્મશાસ્ત્રના અનુસાર મનુષ્યના આત્મિક ઉધ્ધાર કરવાની જવાબદારી ઈશ્વરે જેના વાણીમાં સત્યતા હોય એવી ગુરુને સોંપી છે. એટલે જ જે સદ્ગુરુ જીવન અને આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનું દાન કરે છે એને ઈશ્વર ગણીને પૂજવું.

(૭).ધર્મગ્રંથો પ્રમાણે ગુરુની કૃપા સંપુર્ણ પ્રમાણે પ્રાપ્ત કરવા માટે ગુરુદક્ષિણા આપવી જરૂરી છે. સાધકે યથા શક્તિ તન (શ્રમ), મન (જ્ઞાનનો પ્રચાર), ધન આપીને ગુરુની સેવા કરવી એ જ સાચી ગુરુદક્ષિણા કહેવાય. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું છે તેમશિષ્ય ગુરુને આદર અને પ્રેમભાવથી જે કાંઈ ભેટ આપે ભલે એ ફુલ જેવી નાનામાં નાની વસ્તુ કેમન હોય એને જ ગુરુદક્ષિણા આપી એવું કહેવાય.

(૮).ગુરુકૃપાથી ભૌતિક લાભ જેવું કે ધન, સાંસારિક સુખ, પુત્ર પ્રાપ્તિ અથવા જમીન જાયદાદ મેળવ્યા બાદ સિદ્ધયોગ સાધના બંધ કરવી અને ગુરુદેવ પ્રતિ શ્રદ્ધા છોડી દેવી એ ઘણું જ અયોગ્ય કહેવાય.

આવું કરવાથી સાધકને મળેલ લાભ લાંબા સમય સુધી ટકતો નથી અને તે સંસારની અનેક મુશ્કેલીઓ પાછો ધકેલાય જાય છે. એટલે જ લાભ મેળવ્યા પછી પણ ગુરુદેવ ઉપર જીવનભર શ્રદ્ધા રાખવી જરૂરી છે.

સિદ્ધયોગ આરાધનામાં આડંબરની જરૂર નથી :

ગુરુદેવ સિયાગે બતાવેલી આરાધના ના વિશિષ્ટતા એ છે કે એમાં કોઈપણ જાતના આડંબરને સ્થાન નથી. આમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના કપડા, ખાનપાન કે આસનની જરૂર હોતી નથી. સાધકને જે પહેરાવ ઠીક લાગે તે અને જે જગ્યા અનુકૂળ હોય તે જગ્યાએ સાધક ધ્યાન કરી શકે છે. પછી એ રૂમમાં હોય કે બહાર ખુલ્લામાં બેઠો હોય. ગુરુદેવના ઘણા શિષ્યો પ્રવાસ કરતી વખતે

वर्तमान भारत

स्वामी विवेकानन्द जी ने उस समय के भारतीय समाज और राजव्यवस्था का वर्णन किया है, जो जिज्ञासुजनों के ज्ञान बोध के लिए यहाँ दिया जा रहा है।

वैदिक पुरोहित मन्त्रबल से बलवान थे। उनके मन्त्रबल से देवता आहूत होकर भोज्य और पेय ग्रहण करते और यजमानों को वांछित फल प्रदान करते थे। इससे राजा और प्रजा दोनों ही अपने सांसारिक सुख के लिए इन पुरोहितों का मुँह जोहा करते थे। राजा सोम पुरोहितों का उपास्य था। इसीलिए सोमाहुति चाहने वाले देवता जो मन्त्र से ही पुष्ट होते और वर देते थे, पुरोहितों पर प्रसन्न थे। *दैव-बल के ऊपर मनुष्य-बल कर ही क्या सकता है ?*

मनुष्य बल के केन्द्र राजा लोग भी तो उन्हीं पूरोहितों की कृपा के भिखारी थे। उनकी कृपादृष्टि ही राजाओं के लिए काफी सहायता थी और उनका आशीर्वाद ही सर्वश्रेष्ठ राजकर था। पुरोहित लोग राजाओं को कभी डर दिखा आज्ञाएँ देते, कभी मित्र बन सलाहें देते और कभी चतुर नीति के जाल बिछा उन्हें फँसाते थे। इस प्रकार उन लोगों ने राजकुल को अनेक बार अपने वश में किया।

राजाओं को पुरोहितों से डरने का सबसे मुख्य कारण यह था कि उनका यश और उनके पूर्वजों की कीर्ति पुरोहितों की ही लेखनी के अधीन थी। राजा अपनी जिंदगी में कितना ही तेजस्वी और कीर्तिमान क्यों न हो, अपनी प्रजा का माँ-बाप ही क्यों न हो, पर उसकी वह अत्युज्ज्वल कीर्ति समुद्र में गिरी हुई ओस की बूंदों की तरह काल-समुद्र में सदा के लिए विलीन हो जाती थी। केवल अश्वमेधादि बड़े बड़े या ग-यज्ञों का अनुष्ठान करने वाले तथा बरसात के बादलों की तरह ब्राह्मणों के ऊपर धन की झड़ी लगाने वाले राजाओं के ही नाम इतिहास के पृष्ठों में पुरोहित-प्रसाद से जगमगा रहे हैं।

आज ब्राह्मण्य जगत् में देवताओं के प्रिय **'प्रियदर्शी धर्माशोक'** का केवल नाम भर रह गया है, पर परीक्षित-जनमेजय से बालक, युवा, वृद्ध...सभी भली भाँति परिचित हैं।

राज्य-रक्षा, अपने भोग-विलास, अपने परिवार की पुष्टि और सबसे बढ़कर, पुरोहितों की तुष्टि के लिए राजा लोग सूर्य की भाँति अपनी प्रजा का धन सोख लिया करते थे। *बेचारे वैश्य लोग ही उनकी रसद और दुधारी गाय थे।*

प्रजा को कर उगाहने या राज्य-कार्य में मतामत प्रकट करने का अधिकार न हिन्दू राजाओं के समय में था और न बौद्ध शासकों के ही समय में। यद्यपि महाराज युधिष्ठिर वारणावत में वैश्यों और शूद्रों के घर गये थे, अयोध्या की प्रजा ने श्री रामचन्द्र जी को युवराज बनाने के लिए प्रार्थना की थी, सीता के वनवास तक के लिए छिप छिपकर सलाहें भी की थीं तो भी प्रत्यक्ष रूप से, किसी स्वीकृत राज्य-नियम के अनुसार, प्रजा किसी विषय में मुंह नहीं खोल सकती थी। वह अपने सामर्थ्य को अप्रत्यक्ष और अव्यवस्थित रूप से प्रकट किया करती थी। उस शक्ति के अस्तित्व का ज्ञान उस समय भी उसे नहीं था। इसीसे उस शक्ति को संगठित करने का उसमें न उद्योग था और न इच्छा ही। जिस कौशल से छोटी छोटी शक्तियाँ आपस में मिलकर प्रचण्ड बल संग्रह करती हैं, उनका भी पूरा अभाव था।

क्या यह नियमों के अभाव के कारण था? नहीं। नियम और विधियाँ सभी थीं। कर-संग्रह, सैन्य-प्रबन्ध, विचार-सम्पादन, दण्ड-पुरस्कार आदि सब विषयों के लिए सैकड़ों नियम थे, पर सबकी जड़ में वही ऋषि-वाक्य, देव शक्ति अथवा ईश्वर की प्रेरणा थी।

न उन नियमों में जरा भी हेरफेर हो सकता था, और न प्रजा के लिए यही सम्भव था कि वह ऐसी शिक्षा प्राप्त करती, जिससे आपस में मिलकर लोक-हित के काम कर सकती, अथवा राज-कर के रूप में लिये हुए अपने धन पर अपना स्वत्व रखने की बुद्धि उसमें उत्पन्न होती, या यही कि उसके आय-व्यय के नियमन करने का अधिकार प्राप्त करने की इच्छा उसमें होती।

संदर्भ-श्री विवेकानन्द
साहित्य भाग-9, पृष्ठ-201 से

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

कठिनाई में...

योग की और भी अधिक उन्नत अवस्थाओं में ये अंधकार या जड़ता के काल उत्तरोत्तर कम लंबे होते जाते हैं, कम कष्टदायक होते जाते हैं तथा इसके साथ-ही-साथ एक ऐसी महत्तर चेतना का बोध साधक को ऊपर उठाये रखता है, जो चेतना साधक की तात्कालिक उन्नति के लिये क्रिया तो नहीं करती, पर फिर भी वहाँ वर्तमान रहती है और बाह्य प्रकृति को धारण किये रहती है।

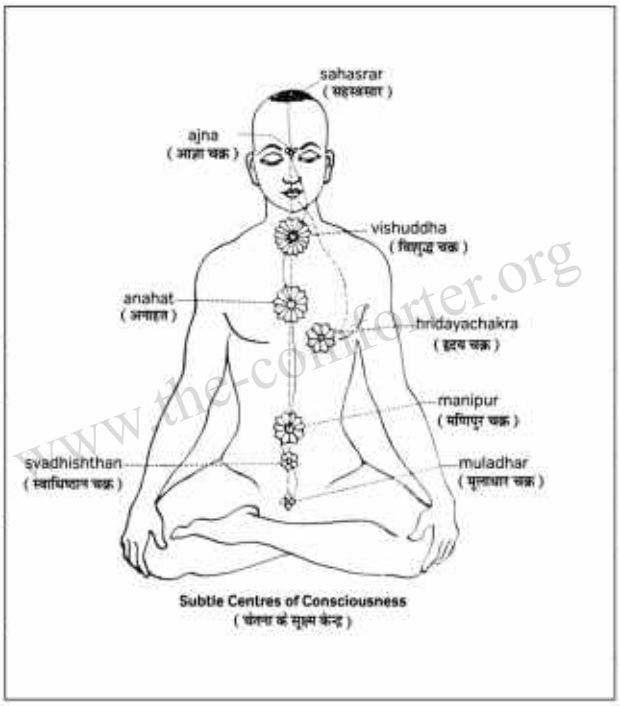

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

www.the-comforter.org

दूसरा कारण है किसी प्रकार के प्रतिरोध का होना, मानव प्रकृति में किसी ऐसी चीज का होना जिसने पहले के अवतरण को अनुभव ही नहीं किया है, जो अभी तक तैयार नहीं है, जो संभवतः परिवर्तित ही नहीं होना चाहती -यह चीज अधिकतर या तो मन की या प्राण की कोई प्रबल अभ्यासगत वृत्ति होती है या भौतिक चेतना की किसी प्रकार की अस्थायी जड़ता होती है; ठीक हमारी प्रकृति का कोई भाग नहीं होती-और यही चीज, चाहे स्वयं प्रकट हो या गुप्त, इस बाधा को हमारे मार्ग में खड़ी कर देती है। यदि कोई अपने अंदर इसके कारण को पकड़ सके, उसे स्वीकार करे, उसकी क्रिया को देख सके और उसे दूर करने के लिये दिव्य शक्ति का आह्वान कर सके तो ये अंधकार के काल बहुत कुछ अल्पस्थायी बनाये जा सकते हैं और इनकी तीव्रता भी कम हो सकती है। पर जो भी हो, भागवत शक्ति पर्दे के पीछे सर्वदा ही कार्य करती रहती है और एक दिन-जब कि हम शायद इसकी जरा भी आशा नहीं करते-ये सब बाधाएँ छिन्न-भिन्न हो जाती हैं, अंधकार के बादल उड़ जाते हैं और फिर से प्रकाश और धूप छा जाते हैं। इन सब अवस्थाओं में सबसे उत्तम बात, अगर कोई उसे कर सके तो, यह है कि न तो उद्विग्न हुआ जाये न हताश, बल्कि शांति के साथ डटे रहा जाये और अपने आपको दिव्य ज्योति की ओर खोले, फैलाये रखा जाये और विश्वास के साथ उसके आने की प्रतीक्षा की जाये; इस तरह, मैंने देखा है कि, इन अग्निपरीक्षाओं का समय बहुत घट जाता है। इसके बाद, जब ये बाधाएँ दूर हो जाती हैं तब हम देखते हैं कि इस बीच बहुत अधिक उन्नति हो गयी है और चेतना ग्रहण और धारण करने में पहले की अपेक्षा बहुत अधिक समर्थ हो गयी है। आध्यात्मिक जीवन में भी जो कठिनाइयाँ और परीक्षाएँ आती हैं, उन सबके बदले साधक को कुछ लाभ भी मिलता है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के बारे में

यहाँ पर संभावना बल्कि संभाव्यता अपने-आपको प्रस्तुत करती है -- प्रकृति के ऐक्य और उसके कार्यों में बुद्धि की **सर्वव्यापकता** की दृष्टि से-हो सकता है कि वृक्ष और पत्थर अपनी **समग्रता** में ऐसी ही विभक्त सत्ताएँ हैं, ऐसा रूप हैं जिनमें अभी तक सचेतन मन का प्रवेश और अधिकार नहीं हुआ है।

एक सचेतन बुद्धि है, जो अपने ही अंदर सपने देख रही है या फिर पेशीस्तम्भ के रोगी की तरह अपने परिवेश के बारे में अभिज्ञ तो है लेकिन चूंकि अभी तक उसका माध्यम उसके अधिकार में नहीं है (पेशी स्तम्भवाले की बुद्धि अस्थायी रूप से उसे छोड़ जाती है) इसलिये प्राण या मन का कोई लक्षण नहीं दीखता और न वह उग्र रूप से अपने परिवेश पर क्रिया कर सकता है। हमें इस अपूर्ण संभाव्यता पर रुक जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि मनोविज्ञान की नयी गवेषणाएँ इस बात को अपने आग्रह में दुर्दमनीय और प्रत्यक्ष प्रमाण का प्रतिवेशी बना देती हैं। अब हम जानते हैं कि मनुष्य के अंदर एक स्वप्नमय पुरुष या सुषुप्त सत्ता है।

जो जाग्रत चेतना से भिन्न है जो सुन्न, स्वापक औषधियों के कारण सोये हुए, **सम्मोहित** और **सोये** हुए लोगों में सक्रिय होती है, जो वह जानती है जो जाग्रत मन नहीं जानता, वह समझती है जो जाग्रत मन नहीं समझता, उसे ठीक-ठीक याद रखती है जिसे जाग्रत मन ने देखने का भी कष्ट नहीं किया। जाग्रत में यह आभासी सुषुप्त कौन है? और **सोनेवाले में कौन जागता है** जिसकी व्यापक सतर्कता, और पूर्ण अवलोकन, स्मृति और बुद्धि की तुलना में हमारी जाग्रत् चेतना केवल एक खंडित और उतावला स्वप्न है? इस मुख्य बात को ध्यान से देखो कि हमारे अंदर की यह अधिक पूर्ण चेतना क्रम-विकास की उपज नहीं है। कहीं भी विकसित और जाग्रत जगत् में ऐसी कोई सत्ता नहीं है जो अपने-आप, ऐसी पराई भाषा को याद करके दोहराती हो जो शिक्षित मन के लिये बकवास होती है, ऐसी समस्याएँ सहज ही हल कर देती है जिससे चकराकर और थककर शिक्षित मन पीछे हट जाता है, जो हर चीज को ध्यान से देखती, हर चीज को समझती और हर चीज को याद कर लेती है।

इसलिये अन्तर की यह चेतना विकास से मुक्त है और फलस्वरूप हम यह मान सकते हैं कि वह क्रम-विकास से पूर्ववर्ती है। **कठोपनिषद्** के शब्दों में यह सब सोनेवालों में जागनेवाली है--"**एष सुप्तेषु जागृति।**"

यह नयी मनोवैज्ञानिक गवेषणा अभी अपने शैशव में है और हमें यह नहीं बतला सकती कि यह गुप्त चेतना क्या है। परन्तु योग से प्राप्त ज्ञान हमें निश्चित रूप से आग्रहपूर्वक कहने योग्य बनाता है कि यह भीतर की वही पूर्ण **मनोमय सत्ता** है, जो शरीर और प्राण को राह दिखाती है, मनोमयः प्राण-शरीर-नेता। यही हमारे क्रम-विकास का संचालन करता है और प्राण में से मन को जगाता है और अपने माध्यम और यंत्र इस प्राण मय मानव शरीर पर अधिकाधिक अधिकार पाता जा रहा है ताकि वह मानसिकता का पूर्ण यंत्र बन जाए, जो अभी नहीं है।

वह पत्थर में भी है और वृक्ष में भी। **इन सोनेवालों में भी एक है जो जागता रहता है** लेकिन उन रूपों में उसने अभी तक मन के प्रयोजन के लिये यंत्र पर अधिकार नहीं पाया है। वह उनका उपयोग केवल विकसनशील प्राण-शक्ति के प्रयोजन के लिये या उसके सक्रिय कार्य के लिये कर सकता है।

अतः हम देखते हैं कि आधुनिक मनोविज्ञान, प्राप्त सामग्री से मिलने वाले एक मात्र बुद्धिसंगत और न्यायसंगत निष्कर्ष से तथ्यों की बाध्यता से अनिवार्य रूप से चलता हुआ उन्हीं सत्यों पर पहुँचता है, जो प्राचीन ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले प्राप्त किये थे।

संदर्भ-महर्षि श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

परन्तु उन श्लोकों का अर्थ जानने के कारण ही दूसरे दिन मैं संस्कृत की परीक्षा में पास हो सका। नंतू ने अपनी **दूरदृष्टि** से जो सहायता मुझे दी थी, उसके कारण मुझे अपने अन्य सभी विषयों में भी उत्तीर्णांक मिल गये।

पिताजी खुश हुए कि मैंने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने का अपना वचन निभाया था। **मेरी कृतज्ञता ईश्वर के चरणों में समर्पित हुई।** मैं जानता था कि केवल उनकी प्रेरणा के कारण ही मैं नंतू के घर पहुँचा था और कूड़े से भरे-खण्ड के अप्रचलित मार्ग से भी उन्हीं की प्रेरणा से गया था। उन्होंने अपनी लीला करते हुए मुझे उबारने की अपनी यथासमय योजना की दुहरी अभिव्यक्ति प्रदर्शित की थी।

निरर्थक मानकर रखी हुई उस पुस्तक पर मेरी दृष्टि पड़ी जिसके लेखक ने परीक्षा भवन में ईश्वर की महत्ता को अपर्याप्त माना था। मेरे मन में उठे इस विचार पर मैं अपनी हँसी को रोक नहीं पाया:

''यदि मैं इस लेखक को बता दूँ कि मृतदेहों के अवशेषों के बीच बैठकर ईश्वर का ध्यान करना हाई स्कूल परीक्षा पास करने का सहज उपाय है तो उसकी उलझनें और अधिक बढ़ जायेंगी !''

नयी प्रतिष्ठा से गौरवान्वित होकर अब मैं खुले रूप से घर छोड़ने की योजना बनाने लगा। अपने एक समवयस्क मित्र जितेन्द्र मजूमदार के साथ वहाँ **आध्यात्मिक** शिक्षा ग्रहण करने का मैंने निश्चय किया।

अपने परिवार से वियोग की कल्पना एक दिन गहरा विषाद बन कर मुझ पर छा गयी। माँ के स्वर्गवास के बाद मेरे दो छोटे भाइयों सनन्द और विष्णु तथा सबसे छोटी बहन थामू के लिये विशेष रूप से मेरा प्रेम तीव्र हो गया था। मैं शीघ्रतापूर्वक अपने एकान्त स्थान, उस छोटी-सी अटारी में जा पहुँचा, जो मेरी आकुल साधना के अनेकानेक प्रसंगों की साक्षी थी। दो घंटो के अश्रुपात के बाद मैंने अपने में एक अपूर्व परिवर्तन अनुभव किया, जैसे किसी चमत्कारी **परिष्कारक** तत्त्व से मेरा अन्तर धुलकर एकदम साफ हो गया हो। सारी आसक्ति हवा हो गयी। मित्रों के मित्र ईश्वर की खोज करने का मेरा निश्चय और भी दृढ़ हो गया।

''मैं तुमसे आखिरी बार अनुरोध करता हूँ।'' मैं पिताजी के समक्ष उनका आशीर्वाद लेने के लिये खड़ा था, तब उन्होंने मर्माहत होकर कहा। ''मेरा और अपने शोकाकुल भाई-बहनों का त्याग मत करो।''

पूज्य पिताजी, मैं आपके प्रति अपने प्रेम को किन शब्दों में व्यक्तकर सकता हूँ? परन्तु उस परमपिता के लिये प्रेम उससे भी बढ़कर है, जिसने मुझे इस लोक में आप जैसा आदर्श पिता प्रदान किया। मुझे जाने दीजिये ताकि मैं किसी दिन अधिक दिव्य ज्ञान के साथ आपके पास लौट सकूँ।''

पिताजी की अनिच्छापूर्ण स्वीकृति के साथ मैं वाराणसी के आश्रम में पहले ही पहुँच चुके अधिपति स्वामी दयानन्दजी ने हृदयपूर्वक मेरा स्वागत किया। लम्बे, छरहरे बदन के, **चिन्तनशील** मुखाकृति वाले स्वामीजी के प्रति मेरे मन में अनुकूल धारणा उत्पन्न हुई। उनकी गौरवर्ण मुखाकृति पर बुद्धसमान भाव था।

मुझे यह देखकर खुशी हुई कि मेरे इस नये घर में भी एक अटारी थी। भोर और प्रात:काल का समय मैं वहीं व्यतीत करने लगा। आश्रमवासियों को ध्यानभ्यास का अत्यल्प ज्ञान था, अत: उनका विचार था कि मुझे अपना सारा समय आश्रम के प्रबन्धात्मक कार्यों में लगाना चाहिये। अपराह्न उनके कार्यालय में मैं जो काम करता था उसके लिये वे मेरी सराहना करते थे।

''ईश्वर को इतनी जल्दी पकड़ने का प्रयास मत करो !'' एक दिन मैं भोर में अटारी की ओर जा रहा था, तब एक आश्रमवासी ने मेरा उपहास किया। मैं दयानन्द जी के पास गया जो गंगा का दृश्य प्रस्तुत करने वाले अपने छोटे-से कक्ष में व्यस्त थे।

''स्वामीजी, मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि यहाँ मुझसे क्या अपेक्षा की जाती है। मुझे ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति की जिज्ञासा है। ईश्वर के अतिरिक्त मैं किसी और चीज से सन्तुष्ट नहीं हो सकता-- न अच्छे कार्यों के साथ जुड़ने से, न उनके सिद्धान्त से, न उन्हें करने से।''

क्रमश: अगले अंक में...

How does spiritual consciousness spread?

Spiritual consciousness spreads by the efforts of divine power. Effort by human mind is not going to be successful in this. Human effort can maximum be described as publicity with the help of scientific equipments. On the basis of his knowledge and power, man can publicize spirituality for a long time.

He can gather lakhs of people continuously by physical means. But any such kind of movement doesn't leave any kind of effect after it is over. People turned away when countless such movements didn't yield any result. When the number of such people increased, they got the courage to revolt and an open revolt started against the religious teachers.

Whatever is left with religious teachers of this era, they are not in a position to give anything beyond that.In order to control this ever-deteriorating situation, the religious teachers of this era tried to supress the revolt through arguments, show off, money. The more the religious teachers tried to gain control, the more the situation got out of hand. They were not left with anything apart from few men and women. They also stayed behind to save themselves due to the fear of their actions in their lifetime.

These powerless and helpless people, who are fearful of their own image are in no position to do anything. Religious teachers also know very well that they are being eaten up by the fear of plundering others by injustice and atrocity all their life. Understanding their weakness very well, religious teachersare trying to save themselves by explaining to them about sacrifice, penance, charity, sin etc. according to their own understanding.

The power to create is there in the rising sun. That's why the people of the world salute the rising sun, nobody salutes the sun when it is about to set. For how long can the helpless and powerless people of this era remain alive on the support of this setting sun is very clear. The way a person who is drowning cannot be saved by the support of a straw, in the same way this paper boat will sink.

It is impossible to save it. History is witness to the fact that waning of every power is a sign of emerging of a new power. The man of this era doesn't believe in a system which doesn't yield any result. If God is there then after contacting him and by prayers, result should definitely come.

-Gurudev Shri Ramlal ji
Siyag, 5 March 1988

Cont. for the next edition ---

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही '**मोक्ष**' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अत: यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अत: साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वत: ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- **आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक** (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (**नाश**) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसे:-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसे:-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसे:- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए '**भोग एवं मोक्ष**' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

❖❖❖

हमारा पथ

''साधना-पथ पर चलने के लिये तुम्हारे अंदर निर्भीक वीरता होनी चाहिए, तुम्हें कभी इस हीन, तुच्छ, दुर्बल और कुत्सित वृत्ति अर्थात् भय के कारण पीछे नहीं हटना चाहिये।

दुर्दमनीय साहस, पूर्ण सच्चाई, सर्वांगपूर्ण आत्मदान-इस हदतक कि तुम कभी हिसाब या मोल-तोल न करो, **तुम इसलिये न दो कि तुम पाओगे**, तुम इस उद्देश्य से आत्मोत्सर्ग न करो कि तुम सुरक्षित रहोगे, तुम ऐसी श्रद्धा न रखो जिसे प्रमाण की आवश्यकता हो, इस पथ पर अग्रसर होने के लिये यह सब अनिवार्य है। बस यही तुम्हें सब विपत्तियों से बचने के लिये आश्रय प्रदान कर सकता है।''

-श्रीमां (श्री अरविन्द आश्रम) 'भय' पुस्तक
पृष्ठ-59

www.the-comforter.org

मन के लिये जरूरी है कि वह शांत रहना सीखें। सच्चा ज्ञान, मन से बहुत ऊपर रहता है। मन शांत और ग्रहणशील हो तो ज्ञान उसे रास्ता दिखाता है और काम करने का तरीका सिखाता है।

जानता है।

इसके बाद आता है मन। **मन ही मनुष्यों को पशु और वनस्पति से अलग करता है।** इसका काम है सोच-विचार करना और रूप देना। लेकिन मुश्किल यह है कि ज्ञान प्राप्त करना इसका काम नहीं है, फिर भी यह अपने आपको ज्ञान का माध्यम समझ लेता है और अपने संकुचित मतों पर दृढ़ता से आग्रह करता है।

यह हमारे कार्य में बहुत सहायता भी कर सकता है और बाधा भी दे सकता है। हमें इसका बहिष्कार नहीं करना है, इसका विस्तार करके, इसकी क्षमता को बढ़ाना है जैसे **कसरत करने से शरीर मजबूत होता है वैसे ही पढ़ाई-लिखाई से, चिंतन-मनन से मन की क्षमता बढ़ती है** लेकिन इस सबके होते हुए भी वह संकीर्ण रह सकता हैं। हाथी और सात अंधों की कहानी की तरह मन एक चीज को टटोलकर उसे ही पूर्ण सत्य मानने का आग्रह करता है। इसके लिये हमें एक और तरह की कसरत की जरूरत होती है। हम किसी विषय के एक पक्ष की सब दलीलों को लेकर पूरी ऊहापोह करें और फिर उसके दूसरे पक्ष को लेकर, अपने-आपको दूसरी स्थितियों में रखकर पूरी सच्चाई के साथ खोज करें।

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग (ब्रह्मलीन)
Sad gurudev Shri Ramlal Ji Siyag (Brahmleen)

इस प्रकार मन देखेगा कि एक नहीं, अनेक पक्ष संभव हैं। फिर उन्हें सामने रखकर इनसे ऊपर उठने की कोशिश की जाये, वहाँ एक ऐसा स्तर है जहाँ सभी विरोधी पक्ष, विरोध छोड़कर मिल जाते हैं, एक हो जाते हैं।

मन के लिये जरूरी है कि वह शांत रहना सीखें। सच्चा ज्ञान, मन से बहुत ऊपर रहता है। मन शांत और ग्रहणशील हो तो ज्ञान उसे रास्ता दिखाता है और काम करने का तरीका सिखाता है।

तीसरा है-**प्राण**। यह इच्छाओं, वासनाओं, पसंद, नापसंद, आसक्ति, घृणा, उग्रता, अवसाद आदि का घर हैं। काव्य, चित्रकला, गान, नृत्य आदि के साथ ईर्ष्या, द्वेष, रगड़-झगड़, हिंसा, क्रुरता आदि का घर यही है। इसे बहुत बार **ऐसे वातग्रस्त बंदर से उपमा दी जाती है जिसने शराब पी रखी हो और ऊपर से बिच्छू ने काटा हो।** हम कह सकते हैं कि प्राण, शक्ति का वाहन है। यह ठीक पटरी पर हो तो इसके लिये दुनिया की कोई चीज असंभव नहीं, उत्साह में आकर यह पहाड़ों से भी टक्कर ले सकता है और यह रूठ जाये तो कुछ भी करना भारी पड़ता है। निराशा, कुंठा, अवसाद इसी में बसा करते हैं। "**चैत्य**" की आग में वह क्षमता होती है, जो प्राण के सारे कूड़े-करकट को जलाकर राख कर सकती है।

चौथा और हमारा सुपरिचित बंधु है **शरीर**। यह बेचारा गधे की तरह मेहनत करता है और **दो ठग-मन और प्राण**- इसका बुरी तरह दुरुपयोग करते

हैं और इसे छूंछा बनाकर छोड़ देते हैं। लेकिन इसके द्वारा ही सबको प्रकट रूप में क्रिया करने का, भौतिक क्षेत्र में प्रकट होने का अवसर मिलता हैं।

मन इसे अपने कच्चे-पक्के विश्वासों के, अपनी सच्ची-झूठी मान्यताओं के अनुसार चलाना चाहता है। प्राण अपनी पसंद-नापसंद और अपनी सनकों की लाठी से इसे हांकता हैं। वह चुपचाप बिना चूं-चा किये सबकी मानता जाता है और अपने-आपको घिसटाता जाता है और अंत में चूसे हुए आम की तरह फेंक दिया जाता है। बहुत-से योगियों ने इसे छोड़ने में ही श्रेय समझा है, योगियों ने इसे बस भोग का साधनमात्र माना हैं इसका अपना भी व्यक्तित्व है, इसकी भी एक दिव्य नियति है, इसकी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

शरीर के अंदर अद्‌भुत सहन-शक्ति और कार्य-क्षमता होती है लेकिन उचित प्रयास के बिना वह सोयी पड़ी रहती है। पूर्ण शांति के साथ की गयी नाना प्रकार की कसरतें शरीर की क्षमता, बल और नमनीयता को बढ़ाती हैं और इसे आदर्श अनुपात और सुंदर, सुगठित आकार देती हैं।

मन, प्राण और शरीर की प्रगति के लिये नाना प्रकार के व्यायाम हैं परंतु उन सबके साथ अभीप्सा का होना जरूरी है। यह जरूरी है कि ये तीनों **चैत्य पुरुष** के चारों ओर गठित हों और उसी के मार्ग-दर्शन में चलें। **चैत्य पुरुष** का भगवान् के साथ सीधा संबंध रहता है और उसके द्वारा बाकी सबको भी उनका स्पर्श मिलता है, वे सब भी भगवान् के ही यंत्र बन जाते हैं और तब कोई कठिनाई नहीं रह जाती। सभी स्तरों पर प्रगति होती रहती है और मानव रूपांतर के अधिकाधिक निकट पहुँचता जाता है।''

यह है संक्षेप में जीवन-विज्ञान। हमारी शिक्षा हमें इस दिशा में ले जाये तो यह शिक्षा है अन्यथा जानकारियों का बोझा है। यह है सच्चा मानव बनने का सरल और श्रेष्ठ उपाय।

एक और जगह श्रीमांने कहा है कि सारे जगत् पर तमस् और असत्य का राज्य है। विश्व की भलाई के लिये **भारत की रक्षा** करनी होगी, क्योंकि एकमात्र भारत ही विश्व को शांति और नवीन व्यवस्था प्राप्त करा सकता है। ये कोरे भावावेश नहीं हैं। श्रीमां ने देखा था कि सारे संसार की समस्याएँ भारत में इकट्ठी हो गयी हैं। जैसे प्रयोगशाला में परीक्षण करने के बाद वैज्ञानिक उनके परिणामों का उपयोग, अन्य स्थानों पर करते हैं, उसी भांति **परम वैज्ञानिक ने सारी दुनिया की समस्याओं को यहाँ इकट्ठा कर लिया और जब यहाँ पर हल निकल जायेगा तो वह सारी दुनिया को रास्ता दिखा सकेगा। लेकिन एकमात्र भगवती शक्ति ही भारत की सहायता कर सकती है,** यदि तुम देश के अंदर विश्वास और मेल पैदा कर सको तो वह मनुष्य-निर्मित किसी भी शक्ति से अधिक शक्तिशाली होगा।

-सम्पादक

''अमर तस्वीर''

पूज्य सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
Sadgurudev Shri Ramlal Ji Siyag

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी(ब्रह्मलीन)
Baba Shri Gangai Nath Ji(Brahmleen)

''आप लोग इस देश में ही नहीं, दुनिया में कहो कि इस व्यक्ति की तस्वीर के ध्यान से एड्स, कैंसर, हेपेटाइटिस बी आदि मिट रहे हैं।

अब मेरी **'आवाज'** तो चली गई **'आकाश'** में, अब इसको कोई रोक नहीं सकता और इसकी **'तस्वीर'** नहीं मरेगी।''

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

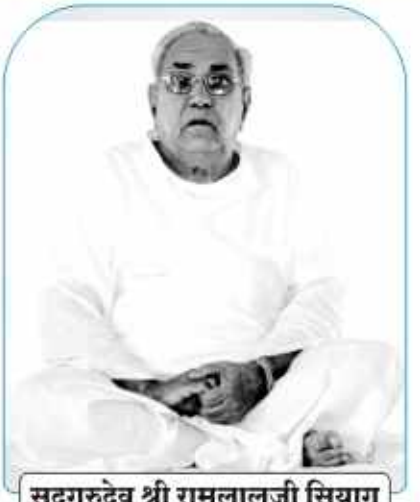

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291–2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

शहीद सरदार भगतसिंह सभा स्थल नगर परिषद, बालोतरा (बाड़मेर) व विभिन्न विद्यालयों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (9 से 20 फरवरी 2020)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

पाली जिले के जैतारण तहसील के ग्राम लाँबिया व अन्य गाँवों के विभिन्न विद्यालयों में आयोजित ध्यान सिद्धयोग शिविर।(17 से 19 फरवरी 2020)

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी